सर्व शिक्षा अभियान

बी०टी०सी० प्रथम सेमेस्टर

संगीत

राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0,
इलाहाबाद

बी0टी0सी0 प्रथम सेमेस्टर

मुख्य संरक्षक	:	**सचिव श्री नीतीश्वर कुमार** बेसिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0, लखनऊ
संरक्षक	:	**राज्य परियोजना निदेशक,** उ0प्र0, सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद, लखनऊ
निर्देशन	:	**श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0
समन्वयन	:	**श्री राम नारायण विश्वकर्मा प्राचार्य,** राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद
परामर्श	:	**श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक** (एस0एस0ए0) राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ
		श्री रमेश तिवारी, सहायक उप निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद
लेखक	:	श्रीमती सुषमा यादव, श्रीमती नीलम मिश्रा, श्रीमती मंजुलेश विश्वकर्मा शोध प्राध्यापक, डॉ0 संध्या सिंह, श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह, श्रीमती परमजीत गौतम, श्रीमती अस्मत नीलो अन्सारी, श्रीमती रत्ना यादव, श्रीमती रश्मि चौरसिया, डॉ0 श्रीमती चन्दना मुखर्जी, श्रीमती मीरा अस्थाना, श्री संजय यादव, श्री नितिन अरोरा, श्रीमती अर्चना मिश्रा, श्री पंकज त्रिपाठी।
कम्प्यूटर कम्पोजिंग	:	राजेश कुमार यादव

कक्षा शिक्षण : संगीत

संगीत :–

- ❖ संगीत के परिभाषिक शब्द–स्वर, स्वरों के प्रकार, नाद, आरोह, अवरोह, पकड़ आलाप, लय, लय के प्रकार आदि का ज्ञान।
- ❖ संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान यथा– तीनताल, झपताल, रूपकताल, कहरवा ताल, दादरा, एकताल व चारताल का परिचयात्मक ज्ञान।
- ❖ संगीत–वन्दना, भजन, स्थानीय लोकगीत, ऋतुओं एवं मौसम सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय एकता (देशगान, राष्ट्रगान) सम्बन्धी गीतों का ज्ञान।
- ❖ भारतीय संगीतज्ञों का जीवन परिचय।
- ❖ त्य/नाटक–लोकनृत्य, स्थानीय नृत्य, भावनृत्य, समसामयिक समस्याओं से पाठयवस्तु से एवं देशभक्ति से सम्बन्धित नाटक करवाना।

संगीत (Music)

संगीत के पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या से पूर्व संगीत के विषय में सम्यक ज्ञान प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है। संगीत प्रकृति की एक अद्भुत देन है। इसके अभाव में मानव का जीवन व्यर्थ सा प्रतीत होता है। सृष्टि के कण–कण में संगीत व्याप्त है। संगीत एक ऐसा विषय है जिसके श्रवण करने से मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी आनन्दित हो उठते हैं। प्राणी तनाव मुक्त हो जाता है तथा चिन्ताओं से मुक्त हो कर स्वर लहरी का आनन्द प्राप्त करता है।

संगीत के पारिभाषिक शब्द– स्वर, स्वरों के प्रकार, नाद, आरोह, अवरोह, पकड़, आलाप, लय, लय के प्रकार

संगीत द्वारा ही व्यक्ति के आन्तरिक मनोभावो को स्वर, ताल तथा नृत्य के माध्यम से दर्शाया जा सकता है। संगीत में परमात्मका का वास है। इस संगीत को परिभाषित करने के लिए पं0 शारंगदेव कृत "संगीत रत्नाकर" नामक ग्रन्थ से प्रस्तुत श्लोक उद्धृत किया गया है।

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते नृत्यं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवृत्ति च

अर्थात "गायन वादन तथा नृत्य इन तीनो कलाओं के मेल को संगीत कहते हैं; इनमें नृत्य वादन के अधीन है, तथा वादन गायन के अधीन है।" संगीत शब्द की व्याख्या करने से भी 'सं' का अर्थ हुआ उत्तम तथा 'गीत' का अर्थ हुआ गायन या गीत, अर्थात उत्तम गायन या गीत को संगीत कहेंगे परन्तु वास्तव में भारतीय संगीत में उपरोक्त तीनों कलाओं का समावेश होता है।

संगीत को इस प्रकार भी परिभाषित किया जाता है। **"संगीत वह ललित कला है जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने मन के भावो को प्रकट करते हैं"** इस परिभाषा में संगीत को ललित कला कहा गया है। ललित कला की श्रेणी में पांच ललित कलायें आती हैं जो इस प्रकार हैं–

1.संगीत कला 2. काव्यकला 3.चित्रकला 4.मूर्तिकला 5. वास्तुकला। इन सभी ललित कलाओं में संगीत कला को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

धार्मिक मान्यता

संगीत का सम्बन्ध देवी देवताओं से जोड़ा गया है। किंवन्दन्ती है कि सर्व प्रथम ब्रह्मा ने सरस्वती देवी को और सरस्वती ने नारद को संगीत की शिक्षा प्रदान की तत्पश्चात नारद ने भरत को संगीत शिक्षा दी और भरत ने "नाट्यशास्त्र" नामक ग्रन्थ की रचना कर जन साधारण में संगीत का प्रचार किया।

उद्देश्य

प्रशिक्षुओं को संगीत विषय से सम्बन्धित परिभाषायें तथा निहित गूढ़ अर्थ का आत्मसात कर लेना चाहिये क्योंकि संगीत की सीमा अनन्त है इसे शब्दों की परिधि में सीमित करना दु:सह कार्य है। प्रशिक्षु संगीत की परिभाषा से भलीलांति परिचित हों ले जिससे संगीत विषयक सम्बन्धित तथ्यों के विषय में सरलता से ज्ञानार्जन कर सकें।

स्वर

नाद से श्रुति व श्रुति से स्वरों की उत्पत्ति हुई है। ''बाईस श्रुतियों में से मुख्य बारह श्रुतियों को स्वर की संज्ञा से विभूषित किया गया है'' संक्षेप में **''बाईस श्रुतियों में से चुनी गई सात श्रुतियां जो एक दूसरे से कुछ अन्तर पर है, तथा जो सुनने में मधुर हैं, स्वर कहलाती हैं।**

शास्त्र सदैव क्रियात्मक का अनुसरण किया करता है। शास्त्रकारों ने लोकगीतों से अथवा शास्त्रीय गायन, वादन में अधिक प्रयोग की जाने वाली सात श्रुतियां चुन ली एवं उन्हें स्वर कहा इन स्वरों की पारस्परिक दूरी भी उतनी ही मानी जितनी कि क्रियात्मक गायन में थी। सातों शुद्ध स्वरों की दूरी ''संगीत रत्नाकर'' में निम्न प्रकार से व्यक्ति की गई है।

''चतुष चतुष्च तुष्चैव षडज मध्यम पंचमा
द्वै द्वै निषाद गांधारो, तिस्त्री ऋषभ धैवतो

अर्थात सा, म, प की चार–चार, रे ध की तीन–तीन तथा ग नी की क्रमशः दो–दो श्रुतियां मानी गई हैं–

कुछ समय बाद शास्त्रकारों ने यह अनुभव किया कि क्रियात्मक संगीत में सिफ 7 स्वरों के योग से संतोष जनक कार्य नहीं चल पाता। इस प्रकार अध्ययन के पश्चात सात स्वरों के अतिरिक्त पांच और स्वर प्रचार में आये जिन्हे विकृत स्वर के नाम से पुकारा गाया। भारतीय संगीत में सात स्वरों के नाम इस प्रकार हैं– षडज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद। व्यवहारिक सरलता के लिये गाने में इनके प्रथम अक्षर से सम्बोधित करते हैं। अर्थात– सा, रे, ग, म, प, ध, नी का प्रयोग करते हैं–

षडज	ऋषभ	गन्धार	मध्यम	पंचम	धैवत	निषाद
सा	रे	ग	म	प	ध	नी

प्रशिक्षु इन सात स्वरों का नियमित अभ्यास करे जिससे स्वरों पर दक्षता हासिल कर सकें क्योंकि इन्ही सात स्वरों पर संगीत रूपी भवन की नींव है।

स्वरों के प्रकार

स्वरों के मुख्य दो प्रकार माने गये हैं– 1. शुद्ध या प्राकृत स्वर 2. विकृत स्वर

शुद्ध या प्राकृत स्वर

जब ऊपर लिखे सातों स्वर अपने निश्चित स्थान पर रहते हैं तो शुद्ध स्वर या प्राकृत स्वर कहलाते हैं। कहने का तात्पर्य है कि जब ये सातों स्वर अपनी निश्चित श्रुतियों पर स्थिर रहते हैं, तब ये शुद्ध स्वर कहलाते हैं। इन स्वरों की पहचान के लिये किसी भी चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता है। इनकी संख्या सात मानी गई हैं इनके संक्षिप्त नाम इस प्रकार हैं– सा, रे, ग, म, प, ध, नी।

विकृत स्वर

''जो स्वर अपने निश्चित स्थान से थोड़ा उतर जाते हैं अथवा चढ़ जाते हैं, वे विकृत स्वर कहलाते हैं।'' सप्तक में पांच स्वर ऐसे हैं जो शुद्ध तो होते ही हैं साथ ही साथ उनका विकृत रूप भी गायन व वादन में प्रयुक्त होता है। विकृत स्वर के भी दो प्रकार होते हैं–

1. कोमल विकृत
2. तीव्र विकृत

कोमल विकृत

जब कोई स्वर अपनी शुद्धावस्था (निश्चित स्थान) से नीचा होता है तो उसे कोमल विकृत स्वर कहते हैं। सप्तक में रे, ग, ध, नी ये चार स्वर होते हैं जिनका कोमल विकृत रूप प्रयोग किया जाता है। कोमल विकृत स्वर की पहचान के लिये स्वरों के नीचे पड़ी रेखा का चिह्न लगाया जाता है। जैसे– रे ग ध नी

तीव्र विकृत

''जब कोई स्वर अपनी शुद्धावस्था (निश्चित स्थान) से ऊपर होता है तो उसे तीव्र विकृत स्वर कहते हैं। सप्तक में मात्र मध्यम स्वर ऐसा है जिसका तीव्र विकृत रूप गायन, वादन में प्रयोग किया जाता है। इसकी पहचान के लिये मध्यम स्वर के ऊपर खड़ी रेखा या लकीर का चिह्न दर्शाया जाता

1
है। जैसे– (म) गाते समय मध्यम को उसकी निश्चित अवस्था से ऊपर चढ़ाकर गाया जाता है।

इस प्रकार एक सप्तक में 7 शुद्ध, 4 कोमल तथा 1 तीव्र कुल मिलाकर 12 स्वर होते है, जिनका क्रम इस प्रकार है–

						1					
सा	रे	रे	ग	ग	म	मं	प	ध	ध	नी	नी

स्वरों को एक अन्य दृष्टिकोण से भी विभाजित किया गया है–

1. चल स्वर

2. अचल स्वर

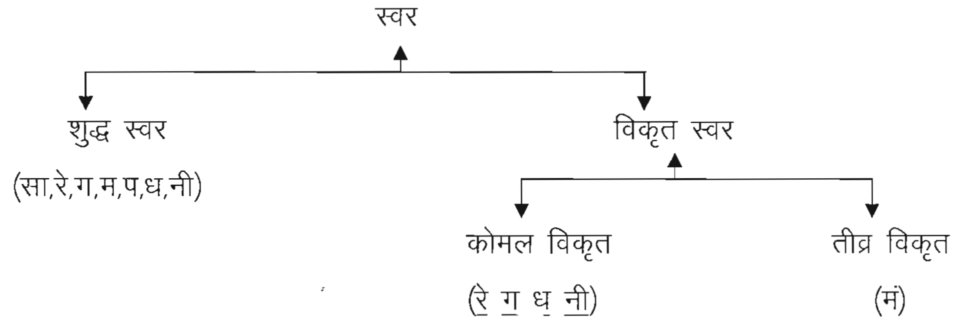

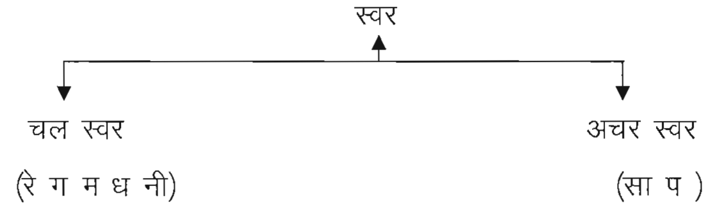

चल स्वर

वे स्वर जो शुद्ध होने के साथ–साथ विकृत (कोमल या तीव्र) भी होते हैं, चल स्वर कहलाते हैं। जैसे– रे, ग, म, ध, नी। रे ग ध नी का कोमल विकृत रूप तथा मध्यम (म) का तीव्र विकृत रूप प्रयोग किया जाता है।

अचल स्वर

वे स्वर जो सदैव शुद्ध होते हैं। विकृत कभी नहीं होते हैं। सप्तक में सा तथा प दो स्वर अचल स्वर कहलाते हैं क्योंकि में अपने स्थान पर अडिग रहते हैं न तो ये कोमल होते हैं न तीव्र।

प्रशिक्षुओं को चाहिये कि वे स्वर तथा उसके प्रकार को श्यामपट्ट पर या चार्ट द्वारा समझा सकें। डायग्राम द्वारा विषयवस्तु को और आसानी से ग्रहण किया जा सकता है। अतः यह प्रयास करें कि पाठ्य सामग्री को श्यामपट्ट पर अंकित कर चित्र इत्यादि बनाते हुए सहजता से छात्रों के मानस पटल पर विषय सम्बन्धी समस्या का निस्तारण कर सकें–

स्वरों के प्रकार का दो प्रकार से विभाजन दर्शाया गया है। प्रशिक्षु भली भाँति उसके सूक्ष्म अन्तर को समझें तथा क्रियात्मक रूप में स्वयं गा कर स्वरों के उतार चढ़ाव तथा विकृतावस्था का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करें। प्रशिक्षुओं का प्रयास होना चहिये कि शुद्ध स्वर, कोमल स्वर, तीव्र स्वर, शुद्ध रूप से गा सकें।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

- गायन वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं के मेल को संगीत कहते है।
- वाईस श्रुतियों में से सात चुनी गई श्रुतियां जो एक दूसरे से कुछ अन्तर पर है तथा सुनने में

मधुर है स्वर कहलाती हैं।

- सात शुद्ध स्वरों के शास्त्रीय नाम, षडज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम धैवत तथा निषाद है। सरलता के लिये इन्हें–सा, रे, ग, म, प, ध, नी कहा जाता है।
- स्वरों के दो प्रकार होते हैं। शुद्ध स्वर तथा विकृत स्वर।
- विकृत स्वर दो प्रकार के होते हैं कोमल विकृत तथा तीव्र विकृत
- स्वरों का एक अन्य वर्गीकरण इस प्रकार है– 1. चल स्वर 2. अचल स्वर

नाद

"न नादेन बिना गीतं, न नादेन बिना स्वरः।
न नादेन बिना नृत्तं तस्मान्नादात्मकं जगत्।।

अर्थात न तो नाद के बिना गीत है, न नाद के बिना स्वर है, न नाद के बिना नृत्य है, यह समस्त जगत ही नादात्मक हैं।

नाद क्या है ? नाद एक नियमित और स्थिर आंदोलन वाली ध्वनि है। संक्षेप में "नियमित तथा स्थिर आन्दोलन संख्या वाली मधुर ध्वनि नाद कहलाती है।" नाद संगीत का आधार है।

नाद के भेद

अनाहत नात
(गुप्त नाद या सूक्ष्म नाद, मोक्ष प्राप्ति का साधन)

आहत नाद
→ एक वस्तु का अन्य वस्तु पर आघात होने से
→ दो वस्तुओं के परस्पर रगड़ने से
→ किसी वस्तु में हवा के प्रयोग से

नाद की विशेषताए

1. नाद का छोटा बड़ापन
2. नाद की जाति
3. नाद की ऊंचाई अथवा निचाई

संगीत का सम्बन्ध मधुर ध्वनि से है जिसमें नियमित आन्दोलन होते हैं। कहने का अर्थ है कि संगीतोपयोगी ध्वनि को नाद कहते हैं।

नाद के दो भेद होते हैं– 1. अनाहत नाद 2. आहत नाद

अनाहत नाद

यह नाद बिना आघात के उत्पन्न होता है तथा साधारणतया सुनाई नही देता, इसे सूक्ष्म या गुप्त नाद भी कहते हैं। सिद्ध लोग इसकी साधना करके मोघ की प्राप्ति करते हैं।

आहत नाद

जो नाद किसी आघात द्वारा उत्पन्न होता है उसे आहत नाद कहते हैं। प्रचलित संगीत में इसी नाद का प्रयोग होता है। यह नाद तीन प्रकार से उत्पन्न होता है–

1. किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर आघात होने से – जैसे तबले पर हाथ के आघात से ध्वनि का उत्पन्न होना।
2. किन्ही 2 वस्तुओं के आपस में रगड़ने से, जैसे सांरगी या वायालिन पर गज (Bow) रगड़ने से ध्वनि का उत्पन्न होना।
3. किसी वस्तु में जब हवा भरी जाती है या निकाली जाती है– जैसे बांसुरी या बीन में हवा भरने से ध्वनि का उत्पन्न होना। इसी प्रकार कंठ में भी वायु के प्रवेश से कण्ठ की स्वर तंत्रियां कम्पित होती हैं और ध्वनि उत्पन्न होती है।

सभी प्रकार की आवाज, जो हमारे कानों द्वारा सुनी जा सकती हैं नाद कहलाती हैं। वस्तुतः नाद का एक सामान्य वर्गीकरण इस प्रकार भी है–

1. कोलाहल अथवा कर्कश नाद
2. मधुर नाद

ध्यान देने योग्य बिन्दु

प्रशिक्षु विशेष रूप से दोनों प्रकार में अन्तर समझने का प्रयास करें। सभी नाद को संगीतो पयोगी नही माना जा सकता। वह ध्वनि जो कानो को अप्रिय लगे, अनियमित हो तथा जिसमें मिठास न हो वह कोलाहल या कर्कश नाद की श्रेणी में आएगा जबकि वह ध्वनि जिसमें मधुरता हो, मिठास हो, तथा रंजकता हो, वह मधुर नाद की श्रेणी में आएगा और इसी ध्वनि को संगीतोपयोगी मान कर नाद कहा गया है। स्थिर तथा नियमित आन्दोलन संख्या युक्त यही ध्वनि संगीतोपयोगी नाद है, शेष सभी अस्थिर तथा अनियमित आन्दोलन संख्या वाली ध्वनियां मात्र कोलाहल, शोर, या कर्कश नाद हैं।

नाद की मुख्य तीन विशेषताएं

1. नाद का छोटा बड़ापन
2. नाद की जाति
3. नाद की ऊंचाई व निचाई

1. नाद का छोटा–बड़ापन

क्रियात्मक संगीत में हम यह भी अनुभव करते हैं कि धीरे से उच्चारण किया गया स्वर थोड़ी दूर तक और जोर से उच्चारण किया गया स्वर अधिक दूरी तक सुनाई पड़ता है। इसी को संगीत में नाद का छोटा बड़ापन कहते हैं।

क्रियाविधि द्वारा– तानपूरे के तार को धीरे से आघात करने से तार के आन्दोलन की चौड़ाई कम होगी तथा तार कम दूरी तक ऊपर नीचे कम्पन करेगा, फलस्वरूप, छोटा नाद उत्पन्न होगा।

जैसे–

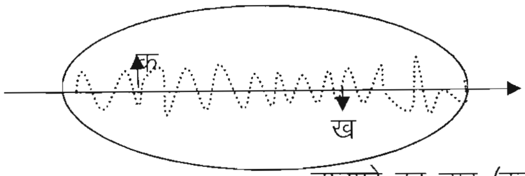

तानपूरे का तार (कम्पन का विस्तार क्षेत्र छोटा)

ठीक इसके विपरीत तार को जोर से छेड़ने से आन्दोलन की चौड़ाई अधिक होगी और बड़ा नाद उत्पन्न होगा। इस नाद की ध्वनि अधिक दूर तक तथा स्पष्ट सुनाई पड़ेगी।

जैसे–

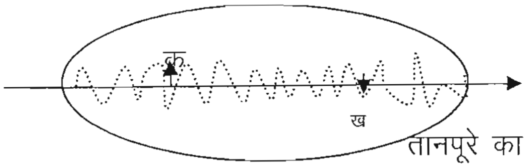

तानपूरे का तार

(कम्पन का विस्तार क्षेत्र बड़ा)

सरल शब्दों में प्रशिक्षु यह जान लें कि यदि 'सा' को हम धीरे से उत्पन्न करें तो उसे पास के ही लोग सुन सकते हैं। परन्तु जब उसे जोर से उत्पन्न किया जाये तो दूर के लोग भी सुन सकते हैं। यह गुण नाद का छोटा– बड़ापन कहलाता है।

नाद की जाति

नाद के इस गुण से हमे यह ज्ञात होता है कि जो नाद उत्पन्न हो रहा है वह किसी वस्तु या वाद्य का हैं कहने का आशय है कि नाद के उत्पन्न होने पर हम केवल उसे सुनकर कह सकते हैं कि यह नाद अमुक वाद्य अथवा किसी परिचित कण्ठ से उत्पन्न हो रहा है।

नाद के इसी गुण को नाद की जाति कहते हैं–

क्रियाविधि द्वारा

प्रशिक्षु कई वाद्यों को समूह में बजाकर बिना देखे मात्र ध्वनि से वाद्यों को पहचानने का प्रयास करें। नाद के इस विशिष्ट गुण के कारण सामूहिक ध्वनि में भी तबला, सितार, कंठस्वर अलग–अलग पहचाना जा सकता है। प्रशिक्षुकु अपने समूह में इसका क्रियात्मक रूप से चर्चा करें तथा निष्कर्ष के रूप में प्राप्त ज्ञान से लाभान्वित हों।

विभिन्न वाद्यों के स्वरों में भिन्नता होने का कारण यह है कि प्रत्येक वाद्य के सहायक नादों की संख्या, उनका क्रम और प्राबल्य एक दूसरे से भिन्न होता है। इसी को नाद की जाति या गुण कहते हैं। वैज्ञानिकों का कथन है कि कोई भी नाद अकेल। नहीं उत्पनन होता, उनके साथ कुछ सहायक नादभी उत्पन्न होते हैं।

नाद की ऊँचाई निचाई

गायन या वादन करते समय यह अनुभव किया जाता है कि प्रत्येक नाद दूसरे नाद से ऊँचा या नीचा होता है–जैसे ''स'' से ऊँचा रे है तथा 'ग'से नीचा 'रे' है। स्वर अथवा नाद की ऊँचाई निचाई आन्दोलन संख्या पर आधारित होती है। अधिक आन्दोलन संख्या वाला स्वर ऊँचा तथा कम आन्दोलन संख्या वाला स्वर अवश्य ही नीचा होगा।

विशेष

नाद का ऊँचा नीचा पन नाद से उत्पन्न होने वाली एक सेकेण्ड की आन्दोलन संख्याओं पर निर्भर होता है। एक सेकेण्ड में नाद की आन्दोलन संख्या जितनी अधिक होगी नाद उतना ही ऊँचा होगा, तथा एक सेकेण्ड में नाद की आन्दोलन संख्या जितनी कम होगी नाद उतना ही नीचा होगा।

प्रशिक्षु स्वयं सात स्वरों को गा कर या बजा कर स्वरों की पारस्परिक ऊँचाई निचाई को समझने का प्रयास करें। सातों स्वरों की आन्दोलन संख्या क्रमशः उत्तरोत्तर बढ़ते हुए क्रम में होती है अतः स्वरों को सुनते ही ज्ञात हो जाता है कि कौन सा स्वर ऊँचा है व कौन सा स्वर नीचा।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

1. नाद एक नियमित तथा स्थिर आन्दोलन संख्या वाली मधुर ध्वनि है।
2. नाद के दो भेद– अनाहत तथा आहत नाद होते हैं।
3. आहत नाद संगीतो पयोगी होता है तथा तीन प्रकार से उत्पन्न होता है। अनाहत नाद संगीतोपयोगी नही होता तथा सिद्ध पुरुषों द्वारा मोक्ष प्राप्ति हेतु इसका उपयोग किया जाता है।
4. नाद की मुख्य 3 विशेषताएं

   क. नाद का छोटा बडापन

   ख. नाद की जाति

   ग. नाद की ऊँचा नीचा पन

आरोह

गाते बजाते समय हम यह देखते हैं कि गायक या वादक किसी भी एक स्वर पर अधिक देर तक नहीं ठहरता है। बल्कि उस स्वर से ऊपर नीचे चढ़ता उतरता रहता है। इसी को सामान्य भाषा में आरोह– अवरोह कहते हैं–

शाब्दिक अर्थानुसार

''माध्य 'सा' से तार सां तक चढ़ते हुए स्वरों के क्रम को आरोह कहते हैं।''

जैसे– सा, रे, ग, म, प, ध, नी

प्रशिक्षु चार्ट की मदद से, या श्यामपट्ट पर स्वरों के चढ़ते हुए क्रम को इस प्रकार दर्शा कर, आरोह का अर्थ स्पष्ट कर सकते हैं। जैसे

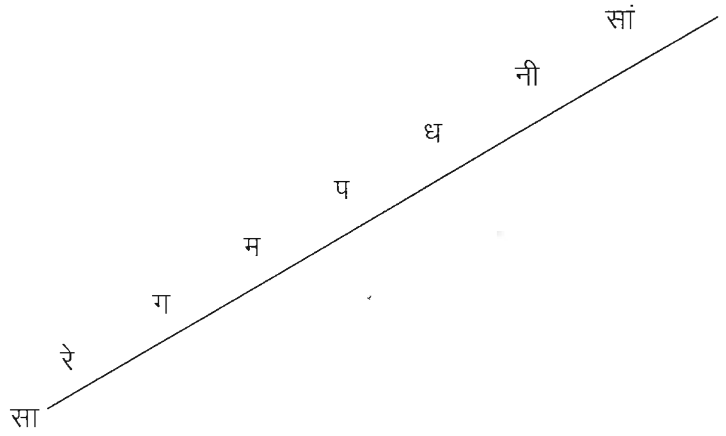

स्वरों का चढ़ता क्रम

अवरोह

आरोह के ठीक विपरीत स्वरों के उतरते हुये क्रम को अवरोह कहते हैं–

शाब्दिक अर्थानुसार

"तार सां से मध्य सा तक उतरते हुये स्वरों के क्रम को अवरोह कहते हैं।"
जैसे सां, नी, ध, प , म , ग रे, सा

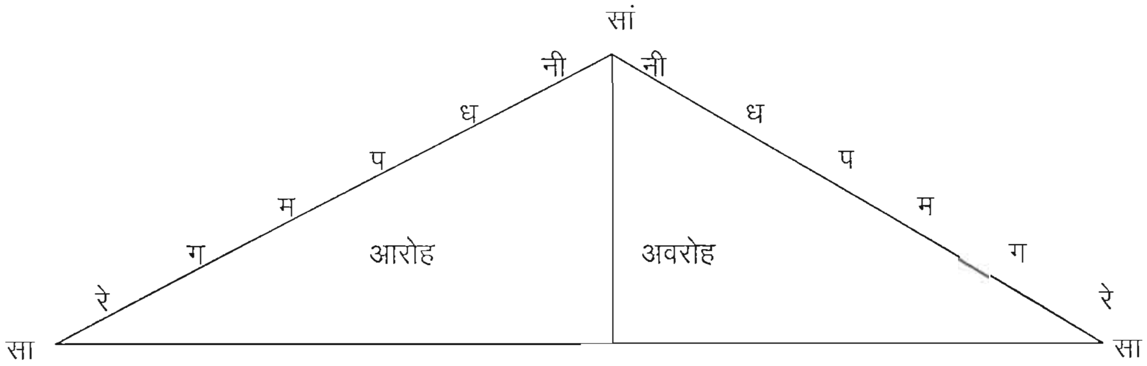

स्वरों का चढ़ता क्रम

नोट–

प्रशिक्षु श्यामपट्ट पर उपरोक्त प्रकार से स्वरों के आरोहात्मक तथा अवरोहात्मक क्रम को स्पष्ट कर सकते हैं।

पकड़

स्वयं पकड़ शब्द से स्पष्ट है कि जिससे किसी राग को पकड़ा जा सके, अर्थात पहचाना जा सके। ''वह छोटा से छोटा स्वर समुदाय जिससे किसी एक राग का बोध हो, राग की पकड़ कहलाता है।'' अन्य शब्दों में ''स्वरों का वह छोटा से छोटा समूह जिससे निर्दिष्ट राग को पहचाना जा सके, पकड़ कहलाता है। 1

उदाहरण– राग यमन का पकड़ इस प्रकार है। नी़ रे ग, रे प, म ग, रे ग रे, नी़ रे सा ।

विशेष– प्रत्येक राग की पकड़ एक दूसरे से भिन्न होती है क्योंकि एक 'पकड़ से एक राग का ही बोध होना चाहिए।

गाते बजाते समय पकड़ का प्रयोग बार–बार किया जाता है क्योंकि पकड़ में राग सूचक सभी स्वर सम्मिलित रहते हैं–

प्रशिक्षुओं को चाहिये कि वे क्रियात्मक रूप से विभिन्न सरल तथा प्रारम्भिक रागों के पकड़ के माध्यम से समूह में इसकी चर्चा करें– चूंकि संगीत एक क्रियात्मक विषय है अतः इसको जितना क्रियात्मक रूप से सीखा जाये उतना ही फलदायक होगा। राग के रूप को समझते हुये, वादी, समवादी वर्जित स्वर, विकृत स्वर आदि का ध्यान रखते हुए, विभिन्न रागों के पकड़ को गाने का प्रयास करें जिससे राग रूप स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

पुनरावृत्ति हेतु मुख्य बिन्दु

- स्वरों के चढ़ते हुये क्रम को आरोह तथा उतरते हुये क्रय को अवरोह कहते हैं।
- वह छोटा से छोटा स्वर समुदाय जिससे किसी राग को पकड़ा जा सके। या पहचाना जा सके– पकड़ कहलाता है।
- प्रत्येक राग की पकड़ एक दूसरे से भिन्न होनी चाहिये।

आलाप– किसी राग के स्वरों का उसके वादी, संवादी तथा विशेष स्वरों को दिखलाते हुये विस्तार करना और साथ में उसे वर्ण, गमक, अलंकार आदि से विभूषित करना, उस राग का आलाप कहलाता है।''

अन्य शब्दों में ''राग के स्वरों को बिलम्बित लय में विस्तार करने को आलाप कहते हैं– या ''राग के स्वरूप की रक्षा करते हुये विलम्बित लय में स्वर विस्तार करने की क्रिया को आलाप कहते हैं।''

आलाप में सौन्दर्य वृद्धि के लिये आवश्यकतानुसार, कण, खटका, मुर्की, मींढ़, गमक, आदि उपकरण का प्रयोग करते हैं। आलाप द्वारा गायक या वादक राग के विशेष स्वरों के साथ राग का स्वरूप श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत करता है। और अपनी हृदयगत भावनाओं को राग के स्वरों द्वारा दूसरे तक पहुंचाता है। अतः यह स्पष्ट है कि आलाप भाव प्रधान होते हैं।

प्राचीन समय में आलाप करने के कई प्रकार प्रचलित थे, जो रागालाप, स्वस्थान नियम का आलाप, आलप्तिगान तथा रूपकालाप नामों से जाने जाते थे।

आधुनिक समय से गायन में आलाप दो प्रकार के होता है– 1. आकार मे 2. नोम तोम में

आकार का आलाप

ख्याल गायन में आकार का आलाप तथा नोम तोम का आलाप ध्रुपद धमार में अधिकतर किया जाता है। आकार का आलाप ख्याल गाने से पूर्व और गाने के बीच खंण्ड–खण्ड में किया जाता है। कुछ गायक गीत के पूर्व बहुत थोड़ा आलाप करते हैं और कुछ विस्तार में गीत या गत के बीच का आलाप अपेक्षाकृत छोटा होता है तथा क्रमशः कई भागों में विभाजित कर दिया जाता है।

नोम तोम का आलाप

ध्रुपद, धमार में गीत के पूर्व किया जाता है और सम्पूर्ण आलाप स्थूल रूप से चार भागों में विभक्त कर दिया जाता है जो कि स्थाई, अन्तरा, संचारी और आभोग के नाम से जाने जाते हैं। संचारी भाग से आलाप लय बद्ध हो जाता है और उसकी लय क्रमशः बढ़ाई जाती है। आभोग में आलाप चरम सीमा में पहुँचा कर, थोड़ी देर बाद समाप्त कर दिया जाता है।

विशेष

नोम तोम के आलाप में आलाप का कोई निश्चित क्रम नहीं होता है। सभी गायक अपनी–अपनी इच्छानुसार उपरोक्त विभागों में परिवर्तन करते हैं।

नोम तोम के आलाप में कहीं कहीं ''नारायण अनन्त हरि' अथवा 'तू अनन्त हरि' आदि शब्दों को जोड़ दिया जाता है। संगीत व्यक्ति प्रधान है अतः गायक अपनी इच्छानुसार परम्परागत विधि से थोड़ा परिवर्तन कर लेता है।

दोनों प्रकार का आलाप, नोम तोम तथा आकार, राग का स्वरूप, चलन, आरोह– अवरोह तथा न्याय के स्वर का ध्यान रखते हुये किया जाता है। अधिकांश ख्याल गायक ख्याल के प्रारम्भ में बहुत थोड़ा आलाप करते हैं उनका कहना है कि ख्याल के पूर्व विस्तृत आलाप लेने से, ख्याल के बीच आलाप का आलाप पुनरावृत्ति प्रतीत होती है वस्तुतः तर्क उचित भी मालूम पड़ता है।

श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव के अनुसार ''केवल राग सूचक स्वरों का प्रयोग प्रारम्भिक आलाप के रूप में किया जाना चाहिए।''

संक्षेप में कुछ निश्चित स्वरों के अंदर विस्तार करने की क्रिया भारतीय संगीत की प्रमुख विशेषता रही है। प्रशिक्षु राग के स्वरों को नियमानुसार बढ़त करते हुये आलाप गायन का अभ्यास करें। आलाप में स्वरों पर ठहराव रहे तथा राग में लगने वाले स्वरों द्वारा ही आलाप का विस्तार हो।

एक अन्य विशेष बात जो ध्यान रखने योग्य है वह यह कि आलाप गाते या बजाते समय स्वर सौन्दर्य, जैसी कण, मीढ़, खटका, मुर्की सभी का प्रयोग करते हुये, क्रमशः आलाप की बढ़त करें–

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

- राग स्वरूप की रक्षा करते हुये विलाम्बित लय में स्वर विस्तार करने की क्रिया को आलाप कहते हैं।
- प्राचीन काल में आलाप करने के कई प्रकार प्रचालित थे जैसे– रागालाप, रूपकालाप, स्वस्थान नियम का आलाप तथा आलाप्ति गाना।
- आधुनिक समय में आलाप, दो प्रकार से होता है– 1. आकार में 2. नोम तोम में।

- आधुनिक आलाप को भी चार भागों, स्थाई, अन्तरा, संचारी तथा आभोग में बांटा गया है।
- नोम तोम के आलाप में, 'तू अनंत हरि 'या' नारायण अनंत हरि' जैसे शब्दों को भी जोड़ दिया जाता है।

लय

मानव के प्रत्येक कार्य में, उसके बोलने चालने, दौड़ने, भोजन करने आदि सभी क्रिया में एक प्रकार की लय रहती है। प्रकृति की गोद में तो लय के असंख्य उदाहरण भरे हुए हैं। श्वास–प्रश्वास में, रूधिर संचार में, सूर्योदय सूर्यास्त में, मौसम परिवर्तन आदि मे लय कूट–कूट के भरा हुआ है। इसी लिये लय प्रधान गति साधारण मनुष्य को शीघ्रता से प्रभावित करते हैं।

"संगीत में समान गति को लय कहते हैं"

हमारे नित्य प्रति के व्यवहार में कोई न कोई लय अवश्य रहती है। चलने फिरने, लिखने, पढ़ने, बोलने चिल्लाने में ऐसा नहीं होता कि कुछ शब्द शीघ्रता से बोलते हों, कुछ को धीरे से और कुछ शब्दों के बीच जहां चाहे जितनी देर तक रूक जायें– बल्कि इन सब में भी एक समान गति रहती है। संगीत में भी समान गति रहती है।

व्यापक अर्थ में समय की किसी भी गति को लय कहते हैं, परन्तु संकुचित अर्थ में समय की केवल 'समान' गति को लय कहते हैं। संगीत में लय का संकुचित अर्थ ग्रहण किया गया है।

लय के प्रकार–

मोटे तौर से लय के तीन प्रकार होते हैं। विलाम्बित लय, मध्य लय और द्रुत लय, गायन, वादन या नृत्य में कोई न कोई लय अवश्य रहती है।

विलम्बित लय

बहुत धीमी चाल या गति को विलम्बित लय कहते हैं। इसे ठाह लय भी कहा जाता है। गायन में (शास्त्रीय संगीत) में बड़े ख्याल ध्रुपद, धमार आदि इसी लय में गाये जाते हैं। विलाम्बित लय के कुछ ताल जैसे– एकताल, झूमरा, तिलवाड़ा तथा आड़ा चौताल आदि हैं। स्थूल रूप से कह सकते हैं कि विलम्बित लय की एक मात्रा, 2 सेकेण्ड के बराबर होती है।

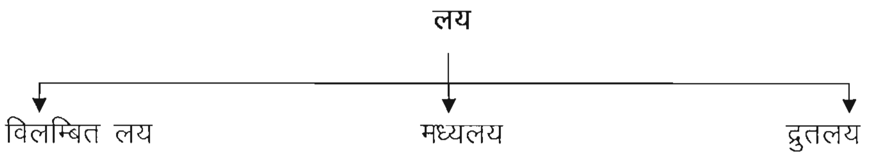

मध्य लय

साधारण लय, जो न अधिक धीमी और न अधिक तेज होती है, मध्य लय कहलाती है। मध्यलय की तुलना हम घड़ी के एक सेकेण्ड के टिक–टिक की चाल से कर सकते हैं। गायन या वादन में छोटे ख्याल, गीत, भवन आदि इसी लय में गाये व बजाये जाते हैं। मध्य लय की एक मात्रा, 1 सेकेण्ड के बराबर होती है।

द्रुत लय

मध्य लय से दुगुनी तेज लय को द्रुत लय कहते हैं। द्रुत लय की एक मात्रा 1/2 (आधी) सेकेण्ड के बराबर होती है। इस लय में अधिकतर गायन में, तराने, छोटे ख्याल आदि गाये जाते हैं। वादन में झाला इसी लय में बजाया जाता है।

संक्षेप में मध्य लय घड़ी की एक टिक–टिक या एक सेकेण्ड के बराबर मानी जाती है। विलम्बित लय इसकी आधी तथा द्रुत लय इसकी दूनी मानी जाती है।

प्रशिक्षु क्रियात्मक रूप से घड़ी का सहारा लेकर घड़ी को आबजेक्ट के रूप में प्रयोग कर लय के विभिन्न प्रकारों का परस्पर अन्तर समझे। सिर्फ इतना ही नहीं स्वयं अपने शरीर में ह्रदय की गति, श्वास प्रश्वास, नाड़ी की गति आदि में लय का अनुभव करें।

प्रशिक्षु चाहें तो प्रकृति में भी नदी क़ी लहरों, झरनों, सूर्योदय, सूर्यास्त प्रत्येक में एक निश्चित लय का अनुभव कर सकते हैं तथा लय के अर्थ को समझ सकते हैं।

विशेष

लय के तीनों प्रकारों में समय का जो निर्धारण एक सेकेण्ड मानक के हिसाब से किया गया है, व्यवहार में इस पालन करने का कोई कठोर नियम नहीं है। कोई भी गायक या वादक लय को अपनी आवश्यकतानुसार विलम्बित अथवा द्रुत कर सकता है।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

- संगीत में समान गति को लय कहते हैं।
- लय के तीन प्रकार विलम्बित लय, मध्य लय और द्रुत लय होते हैं।
- विलम्बित लय मध्य लय की आधी तथा द्रुत लय मध्य लय की दूनी होती है।
- मध्य लय की एक मात्र = 1 सेकेण्ड, विलम्बित लय की एक मात्रा = 2 सेकेण्ड तथा द्रुत लय की एक मात्रा =1/2 सेकेण्ड होती है।

बोध प्रश्न

1. संगीत किसे कहते हैं
2. स्वर किये कहते हैं तथा ये कितने प्रकार की होते हैं ?
3. नाद शब्द से आप क्या समझते हैं इसके बारे में विस्तृत करिये?
4. आरोह–अवरोह तथा पकड़ किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाइयें ?
5. आलाप किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित समझाइयें ?
6. लय से क्या समझते हैं ? लय की महत्ता को दर्शाते हुए इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करियें ?
7. संगीत में स्वर, ताल व लय के महत्व पर प्रकाश डालिये ?

सन्दर्भ साहित्य

1. राग परिचय – प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
2. संगीत शास्त्र दर्पण – श्रीमती शान्ति गोवर्धन
3. संगीत पुष्पांजलि – श्री राम बदन कश्यप
4. कला एवं शिक्षण संगीत – राधा प्रकाशन मन्दिर
5. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री भगवत शरण शर्मा

भाग–2

संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान

सहायक तालों के विषय में चर्चा करने से पूर्व ताल शब्द का अर्थ स्पष्ट करना उचित होगा–

"विभिन्न मात्राओं के विविध समूहों को ताल कहते हैं।" संगीत में केवल मात्रा से काम पूरा नहीं होता क्योंकि मात्राऐं मात्र समय की गति का बोध कराती हैं अतः मात्राओं को नापने के लिये तालों का निर्माण किया गया– स्वर और लय, संगीत रूपी भवन के दो स्तम्भ हैं। किसी एक की अनुपस्थिति में यह भवन अधूँरा रह जाता है। यह सर्वविदित है कि लय से मात्रा और मात्रा से ताल बने।

संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान यथा– तीन ताल झपताल, रूपकताल, कह खाताल, दादरा, एकताल व चारताल का

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार शिवजी के तांडव से 'ता' तथा पार्वती जी के लास्य नृत्य से 'ल' के संयोग से ताल की उत्पत्ति हुई है।

ताल देने के लिये मुख्यतः ताल वाद्य तवला तथा कभी–कभी परवावज का भी प्रयोग किया जाता है। हाथ से भी तालों को दर्शाने की प्रक्रिया प्रचलित है। प्रत्येक ताल के कुछ निश्चित बोल होते हैं, जो तबले या परवावज पर बजाये जाते हैं। ये बोल धी, ना, धिं, ता, किट तक आदि विभिन्न प्रकार के वर्णो से निर्मित होते हैं। अतः ताल को इस प्रकार भी परिभाषित किया जा सकता है।

"कुछ निश्चित मात्राओं के उस समूह को ताल कहते हैं जो ना, धी, ती, धिं, किट, तक, तिर, किट आदि वर्णों से निर्मित होते हैं तथा तबला अथवा परवावज पर बजाये जाते हैं।"

संगीत में ताल के अन्तर्गत विभाग, सम, ताली खाली एवं भरी आदि सभी के विषय में ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। अन्यथा ताल को पूर्णतः परिभाषित करना सम्भव नहीं होगा।

विभाग

प्रत्येक ताल के कुछ हिस्से या खण्ड होते हैं जिन्हें विभाग कहते हैं। जैसे रूपक ताल में तीन विभाग होते हैं। उदाहरणार्थ

1 2 3	4 5	6 7
ती तीना ।	धीना ।	धीना
	2	3

सम

किसी भी ताल की प्रथम मात्रा सम कहालती है। यह ताल का प्राण है तथा अत्यन्त प्रभावशाली होता है। भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में इसे गुण के निशान (X) से दर्शाया जाता है।

उदाहरण के लिये

1 2 3	4 5	6 7
ती ती ना ।	धी ना ।	धी ना
x	2	3

ताली

किसी ताल को हाथ से दिखाते समय जिस स्थान पर ताली बजाते हैं उसे ताली कहते हैं इसे कुछ लोग भरी भी कहते हैं। ताली की संख्या मात्रा के नीचे लिखा जाता है जैसे– यहाँ 2 और 3 संख्या दूसरी और तीसरी ताली की ओर संकेत करती हैं।

1	2	3	4	5	6	7
ती	ती	ना ।	धी	ना ।	धी	ना
x			2		3	

खाली

किसी ताल को हाथ से प्रदर्शित करते समय जिस स्थान पर हाथ को शून्य में हिलाते हुये दिखाते हैं, उसे खाली कहते हैं। भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में खाली के लिये शून्य (0) का चिन्ह प्रयोग किया जाता है जिसे सम्बन्धित मात्रा के नीचे लगाया जाता है जैसे–

झपताल में छठवी मात्रा पर खाली है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना ।	धी	धी	ना ।	ती	ना ।	धी	धी	ना
x		2			0		3		

इस प्रकार हम देखते हैं कि लय से मात्रा और मात्रा से तालों की रचना हुई। ताल अनेक माने जाते हैं, जैसे तीन ताल, झपताल, रूपक ताल, कहरवा ताल, दादरा ताल, एकताल, चारताल आदि। संगीत गायन में सहायक तालो का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। संगीत में प्रयोग किये जाने वाले अलग–अलग मात्राओं के अलग–अलग तालों की रचना हुई है जिनके नाम हैं– त्रिताल, झपताल, चारताल, एकताल, सूलताल, धमार, झूमरा, तीप्ता, रूपक, कहरवा, दादरा इत्यादि।

यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन सभी तालों का प्रयोग भिन्न–भिन्न गायन शैलियों के साथ किया जाता है जैसे ख्याल के साथ त्रिताल, एकताल, झपताल, तिलवाड़ा, ठुमरी के साथ दीपचन्दी, जतताल, ध्रुपद के साथ चारताल, सूलताल, ब्रम्मताल तथा धमार (होरी) के साथ धमार ताल का प्रयोग किया जाता है। उपरोक्त सभी तालों की रचना विभिन्न गीत के प्रकारों के आधार पर ही हुई है।

संगीत प्रशिक्षक या प्रशिक्षुओ को कुछ विशेष तालों, जो कि अधिकतर गायन या वादन (तन्त्रवाद्य) के साथ संगत के लिये प्रयुक्त होती हों, का पूर्ण ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। अतः कुछ महत्वपूर्ण तथा प्रचालित सहायक तालों का वर्णन करना उचित होगा।

तीनताल

परिचय– यह सर्वाधिक प्रचलित तबले की ताल है। इस ताल में 16 मात्राएं तथा 4 विभाग होतें हैं। 1, 5, 13 पर ताली तथा 9 पर खाली होती है। इसका प्रयोग तबले पर, ख्याल अंग की गायकी के साथ संगत तथा solo (एकल प्रदर्शन) के लिये किया जाता है।

ठेका

मात्राएँ	1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
बोल	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
ताल चिह्न	X	2	0	3

झपताल

परिचय इस ताल में 10 मात्राएं तथा 4 विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग क्रमशः 2 –3 –2 –3 मात्राओं का होता है। 1, 3, 8 पर ताली तथा 6 पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग ख्याल अंग की गायकी के साथ संगत के रूप में किया जाता है। कभी–कभी भावगीत के साथ भी संगत सुनाई पड़ता है।

ठेका

मात्राएँ	1 2	3 4 5	6 7	8 9 10
बोल	धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
ताल चिह्न	X	2	0	3

रूपक ताल

परिचय

इस ताल में 7 मात्राएं तथा 3 विभाग होते हैं। 1,4,6 पर ताली होती है तथा इसका प्रयोग सुगम संगीत के साथ संगत के रूप में किया जाता है।

ठेका

मात्राएँ	1 2 3	4 5	6 7
बोल	ती ती ना	धी ना	धी ना
ताल चिह्न	X	2	0

नोट– कुछ विद्वान रूपक ताल की प्रथम मात्रा पर खाली मानते हैं परन्तु ताल की पहली मात्रा पर सम होती है अतः पहली मात्रा पर सम मानना ही उचित है।

कहरवा ताल

परिचय

इस ताल के 8 मात्राएँ तथा 2 विभाग होते हैं। 1 पर ताली तथा 5 पर खाली होती है। कहरवा ताल का प्रयोग भावगीत, फिल्मी गीत, कव्वाली आदि के साथ प्रचुरता से होता है।

ठेका

मात्राएँ	1 2 3 4	5 6 7 8
बोल	धा गे न ति	न क धि न
ताल चिह्न	X	2

दादरा ताल

परिचय– इस ताल में 6 मात्राएं तथा 2 विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग 3–3 मात्राओं का होता है। 1 पर ताली तथा 4 पर खाली होता है। इस ताल की यह विशेषता है कि इसका प्रयोग ''दादरा'' नामक गायन शैली के साथ संगत के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त सुगम संगीत के साथ भी संगत के रूप में बहुतायत प्रयोग किया जाता है।

ठेका

मात्राएँ	1 2 3	4 5 6
बोल	धा धी ना	धा तू ना
ताल चिह्न	X	0

एकताल

परिचय– इस ताल में 12 मात्राएं तथा 6 विभाग होते है प्रत्येक विभाग 2–2 मात्राओं का होता है। 1, 5, 9, 11 पर ताली तथा 3, 7 पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग ख्याल अंग की गायकी के साथ संगत के रूप में किया जाता है।

ठेका

मात्राएँ	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
बोल	धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क त्ता	धागे तिरकिट	धी ना
ताल चिह्न	X	0	2	0	3	4

चारताल

परिचय

यह परवावज पर बजाई जाने वाली खुले खोलों की ताल हैं इस ताल में 12 मात्राएं तथा 6 विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग 2–2 मात्राओं का होता है। 1,5,9,11 पर ताली तथा 3, 7 पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग ध्रुपद अंग की गायकी के साथ संगत के रूप में किया जाता है।,

ठेका

मात्राएँ	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
बोल	धा धा	दिं ता	किट धा	दिं ता	तिट कत	गदि गन
ताल चिह्न	X	0	2	0	3	4

प्रशिक्षु , गायन में ताल के महत्व को भली भांति समझने का प्रयास करें। यह एक क्रियात्मक विषय है अतः प्रशिुक्षओं से आशा की जाती है कि वह पूर्णतः विषय वस्तु से परिचित हो तथा क्रियात्मक रूप का भी आत्मसात करें–

अक्सर पाया गया है कि कोई अत्यन्त विद्वान संगीतज्ञ ताल के विषय में थोड़ा कमजोर होता है जो कि उसकी संगीत की विद्वता को प्रभावित करता है। ताल, स्वर, लय इन सभी को स्वतः अपने में महसूस करें उदाहरणार्थ हमारे शरीर में नाड़ी का स्पन्दन, श्वास गति सभी एक निश्चित लय से चलते है अतः लयात्मकता का ध्यान रखते हुये गायन के साथ किस प्रकार से व कैसी तालों का प्रयोग किया जाना चाहिये यह प्रशिक्षु स्वयं अपने विवके, बुद्धि तथा ज्ञान से निर्धारित करें।

समान मात्राओं की विभिन्न तालें

कई ताले समान मात्राओं, विभाग, ताली, खाली की होने के उपरान्त भी अलग–अलग गायन शैलियों के साथ बजाई जाती हैं ऐसा क्यों ?

प्रशिक्षु को इसके सैद्धान्तिक पक्ष पर दृष्टिपात करना उचित होगा क्योंकि समान मात्राओं की विभिन्न तालों के पीछे वस्तुतः यह अवधारणा रही होगी कि हमारा संगीत देशी संगीत है जो जनरूचि के अनुसार बदलता रहा है जब भारतवर्ष में ध्रुपद गायन का प्रचार था, तो उसके साथ परवावज पर बजाये जाने वाले तालों जैसे, तीवरा, चारताल सूलताल आदि का प्रचलन था परन्तु जब ख्याल गायन का प्रचलन बढ़ा तो एक कम आवाज के वाद्य की आवश्यकता पड़ी, जिससने सम्भवतः तबले को जन्म दिया। अब तबले के प्रचार के साथ–साथ बंद बोलो के तालों जैसे तीनताल, एकताल रूपक आदि का जन्म हुआ।

कहने का आशय है कि प्रशिक्षु इन सहायक तालों को विधिवत् रूप से तबले पर तथा हाथ पर ताली दे कर, प्रदर्शित करें। किसी भी गायन शैली चाहे वह प्रार्थना हो, देशगीत हो, भजन हो, ख्याल हो, प्रशिक्षु इन गायन शैलियों के साथ, ताल देने या संगत करने में सक्षम हों। कुछ विशेष तालें जिनका वर्णन किया जा चुका है, प्रशिक्षु उन तालों का भली–भांति अभ्यास करें। बार–बार अभ्यास कर प्रशिक्षक, उन तालों पर दक्षता हासिल करें ताकि प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ें।

वर्णों का सही उच्चारण

प्रशिक्षु यह ध्यान रखें कि ताल के बोलों का उच्चारण सही हैं। लय का चुनाव– ताल प्रदर्शन करते वक्त प्रशिक्षु एक निश्चित लय कायम करें जो न अधिक तेज हो, न अधिक धीमी।

ताल प्रदर्शन की विधि

प्रशिक्षुक अपने बाएँ हथेली पर दाहिने हाथ की उंगलियों क्रमशः ताली, कनिष्ठा, तर्जनी तथा मध्यमा का प्रयोग करें वे खाली प्रदर्शित करने हेतु, खाली वाले विभाग की प्रथम मात्रा पर हथेली को हवा में झटकते हुए क्रमशः कनिष्ठा, तर्जनी व मध्यमा उंगलियों पर मात्रा गिनें।

इन सब के अतिरिक्त प्रत्येक प्रशिक्षुओं के लिये एक मधुर आवाज का धनी होना काफी महत्वपूर्ण हैं। संगीत प्रशिक्षु भले ही वह ताल वाद्य का प्रशिक्षु क्यों न हो परन्तु वाणी में मधुरता का पुट लाने का अवश्य प्रयास करें।

ताल के बोलो कंठस्थ होना

प्रशिक्षु प्रयास करें कि ताल के बोल कंठस्थ हों जिससे ताल प्रदर्शन के दौरान लय बाधित न हो। कारण यह है कि उच्चारण में सेकेण्ड्स की भी देरी तथा शीघ्रता होगी तो कायम की गई लय में सामंजस्य नहीं रह पायेगा। अतः बोल या वर्ण सही–सही कंठस्थ करें ताकि प्रदर्शन बेहतर हो।

समान मात्राओं की भिन्न–भिन्न तालों में अन्तर को समझना

प्रत्येक प्रशिक्षु के लिये यह आवश्यक है कि वे परस्पर समान मात्राओं के भिन्न–भिन्न तालों का अन्तर स्पष्ट रूप में समझें। उदाहरण के लिये एकताल और चारताल दोनों 12 मात्राओं तथा 6 विभाग की ताल होने के उपरानत भिन्न क्यूं हैं? यह प्रश्न अत्यन्त सहज है– प्रशिक्षु दोनों तालों के परिचय और बोलों का तुलनात्मक अध्ययन करें तथा अन्तर स्पष्ट करें।

नियमित अभ्यास

संगीत, साधना का विषय है। अतः प्रशिक्षु उपरोक्त सभी प्रारम्भिक व मुख्य तालों का नियमित अभ्यास करें एवं समूह में भी ताली का अभ्यास करें जिससे सभी तालों पर, व लय पर नियन्त्रण हो, अधिकार हो।

संक्षेप में यह कहना प्रासंगिक होगा के एक प्रशिक्षु के लिये संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान अति आवश्यक है। यदि प्रशिक्षु को तबला बजाने का ज्ञान है तो वह इन तालों को तबले पर अन्यथा, हाथ पर ताली द्वारा दर्शायें।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

- विभिन्न मात्राओं के विविध समूहों को ताल कहते हैं।
- ताल के अन्तर्गत, सम, ताली, खाली एवं भरी इत्यादि आते है।
- उपरोक्त सभी तालों का प्रयोग भिन्न–भिन्न गायन शैलियों के साथ किया जाता है।
- विशेषकर दादरा ताल का प्रयोग 'दादरा'' नामक गायन शैली के साथ एवं धमार ताल का प्रयोग ''धमार'' नामक गायन शैली के साथ संगत या एकल वादन के रूप में किया जाता है।
- समान मात्राओं की विभिन्न तालों के पीछे छिपी अवधारणा
- प्रशिक्षुओं को ध्यान रखने योग्य बातें– वर्णों का सही उच्चारण, लय का चुनाव, ताल प्रदर्शन की विधि, बोलों का कंठस्थीकरण, समान मात्राओं की विभिन्न तालों में परस्पर अन्तर का ज्ञान, तथा नियमित अभ्यास।

बोध प्रश्न

1. ताल किसे कहते हैं ? संगीत जगत में ताल के महत्व पर प्रकाश डालिये ?
2. गायन के साथ संगत के लिये ताल का होना क्यों आवश्यक है ?
3. समान मात्राओं के भिन्न–भिन्न ताल होने के क्या कारण है ? उदाहरण सहित समझाइये ?
4. तीनताल, रूपक, कहरवा, दादरा, तथा झपताल का परिचय व ठेका लिखिये ?
5. बारह मात्राओं की किन्ही दो तालों का परिचय व ठेका, तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत करिये ?

सन्दर्भ साहित्य

1. राग परिचय, भाग, 1, 2 लेखक		श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
2. संगीत शास्त्र दर्पण	–	श्रीमती शान्ति गोवर्धन
3. ताल परिचय	–	श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत पुष्पांजलि	–	श्री राम बदन कश्पय 'राम'

संगीत वन्दना

प्राचनी काल में ऋषि मुनि श्लोक या मन्त्र का सस्वर पाठ करके ईश्वर की स्तुति किया करते थे। सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, रैदास अथवा नानक सभी ने ईश्वर भक्ति पदों का मंगल गान किया है। सूर्योदय से पूर्व प्रातःकाल शयन समाप्ति के उपरान्त प्रत्येक व्यक्ति प्रभु या अपने इष्ट का स्मरण कर उसकी वन्दना करता है तथा सबके कल्याण की कामना करता है। किसी भी मांगलिक कार्य को करने से पूर्व हम ईश्वर की आराधना करते हैं।

- संगीत वन्दना, भजन, स्थानीय लोकगीत, ऋतुओ एवं मौसम सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय एकता (देशगान, राष्ट्रगान) सम्बन्धी गीतो का ज्ञान

चर्चा बिन्दु

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करें–

प्रशिक्षक –विद्यालय आने के बाद तथा विद्याध्ययन प्रारम्भ करने के पूर्व हमें किस की वन्दना करनी चाहिये ?

प्रशिक्षु ....।

प्रशिक्षक– सरस्वती वन्दना से ही कार्यक्रम या विद्यालय के अध्ययन, अध्यापन का शुभाराम्भ क्यों किया जाता हैं ?

प्रशिक्षु ....।

प्रशिक्षक– जब आप हाथों को जोड़ कर, नयन मूंद कर प्रार्थना स्थल पर खड़े होते हैं तब आपके मन में किस प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं ?

प्रशिक्षु ....।

जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य विद्याध्ययन है। संगीत का सम्बनध सीधे अन्तर्मन से होता है। अतः ईश्वर की ''संगीतमयी'' आराधना सर्वोपरि मानी गई है। इसीलिये विद्याध्ययन का शुभारम्भ हम अपने मन को एकाग्र कर बुद्धि बल की देवी के समक्ष संगीतमय, मंगलगान के रूप में करते हैं। हमारे मन में घर परिवार, पर्यावरण से सम्बन्धित कई विचार आते हैं। अध्ययन; अध्यापन के लिये हमे इन विचारों को त्याग कर एकाग्रचित होना आवश्यक है यही कार्य ईश–वन्दना से होता है।

जब हम हाथ जोड़ कर, आँखे बन्द करके ईश्वर का ध्यान करते है तब हमारे मन में आत्मविश्वास का संचार होता है तथा संगीत पक्ष हमारे मन मस्तिष्क को चेतना, स्फूर्ति एवं शान्ति प्रदान करता है, जिससे हम अध्ययन के समय जो भी सीखते हैं, उसे याद करने में सहायता मिलती हैं।

सरस्वती वन्दना

वर दे, वीणा वादिनि वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नवं
भारत में भर दे, वर दे, वीणा ।।

काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्भर
कलुष भेद तम, हर प्रकाश भर
जगमग, जग, कर दे, वर दे, वीणा।।

नव गति नव लय, ताल छन्द नव
नवल कंठ नव, जलद मंत्र नव
नव नभ के नव, विहंग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे, वर दे वीण।। (गीत निराला)

प्रशिक्षु सर्वप्रथम सरस्वती वन्दना से विद्यध्ययन या अध्यापन कार्य का प्रारम्भ करें। यहां प्रस्तुत सरस्वती वन्दना की स्वरलिपि दी जा रही है। जिससे प्रशिक्षु आसानी से वन्दना सीखने में समर्थ हो।

सरस्वती वन्दना

स्थाई **स्वर लिपि ताल त्रिताल**

म प ध म वी ऽ ण वा 0	पधप प म – – ऽऽऽ दिऽ नि ऽ ऽ 3	ध़ नी सा म व र दे ऽ x	म ध नी ध नी ध व र दे ऽऽऽ 2
– म म म ऽ प्रि य स्व 0	ग रे ग रे सा ग तं त्रऽऽ र व 3	– ग म प ध प ऽ अ म्र त ऽऽ x	ध म प ध प म मं त्र न ऽऽ व 2
– नी ध नी ऽ भा र त 0	सां – ध नी रें मे ऽऽ भ र 3	सां – – –ध दे ऽ ऽ ऽऽ x	म नी ध – व र दे ऽ 2

अन्तरा

ध नी ध प म का ऽ टऽ अं 0	प म ग रे सा ऽ ध उ ऽ र 3	– ध सा रे सा ऽ के ऽ बं ऽ x	म म म म ध न स्त र 2

– म म म म ऽ बहा ज न 0	म (मपम) ग – नी (ऽऽऽ) ज्यों ऽ 3	सा (सा ग) म नी ऽ (तिर) म य x	ध (प ध, प) म म नि (ऽऽऽ) झ र 2
नि ध नि सां क लु ष भे 0	– ध नी ध ऽ द त म 3	म म प ग ह र प्र का x	– ग (रेगरे) सा ऽ श (भ ऽऽ) र 2
– (नि नि) ध नि ऽ जग मग 0	सां ध नि (रें गं रें) ज ग क (र ऽऽ) 3	सां – – (ध ध) दे ऽ ऽ (ऽऽ) x	म नी ध – व र दे ऽ 2

गतिविधि

प्रशिक्षु द्वितीय अन्तरे को प्रथम अन्तरे की ही भांति गयें। गाते समय कोमल स्वरों का तथा ताल की मात्राओं का ध्यान रखें। सूर्यकान्तत्रिपाठी जी की प्रसिद्ध रचना वर दे वीणा वादिनी को प्रशिक्षु चाहें तो स्वयं अन्य स्वर में स्वरलिपि बद्ध कर सकते हैं। इसी प्रकार प्रशिक्षु ईश वन्दना, प्रार्थना आदि का संकलन कर स्वरलिपि बद्ध कर गा सकते हैं या गवा सकते हैं। प्रशिक्षुओं के सहायतार्थ कुछ रचनाकारों के नाम अध्याय के अन्त में दिये जायेंगे ताकि वे भिन्न–भिन्न विषयों पर रचनाएं, कवितायें, स्वरलिपि सहित प्राप्त कर सकें।

सरस्वती वन्दना के अतिरिक्त, ईश वन्दना भारत वन्दना आदि विभिन्न रूपों को गाने का अभ्यास करें।

भजन

मानव जीवन में भक्तिभाव का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति ईश्वर आराधना का प्रभावकारी साधन है। भक्ति और संगीत एक दूसरे के पूरक हैं। जिन गीतों के द्वारा ईश्वर उपासना की जाये वे भजन कहलाते हैं। अन्य शब्दों **में "जिन गीतों में ईश्वर वन्दना अथवा ईश्वर का गुणगान होता है, वे भजन कहलाती है।** ये रचनायें शक्ति रस प्रधान होती है।

भजन में राग का बंधन कम होता है और भाव पक्ष पर विशेष बल दिया जाता है ख्याल के समान इसमें आलाप–तान नहीं होते हैं। इसकी रचना शब्दों के अनुकूल भाव का ध्यान रखते हुये की जाती है। भजन साधारणतया पीलू , भैरवी, खमाज, काफी, देश, मांड आदि चंचल प्रकृति की रागों में गाये जाते हैं। सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, आदि भक्तों ने अनेक भजनों की रचना की जिन्हें भिन्न–भिन्न समय, अलग–अलग स्वरों में लिपि बद्ध किया गया है। नीचे तुलसीदास जी की एक रचना को लिपि बद्ध किया जा रहा है।

चर्चा बिन्दु

प्रशिक्षक निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें।

प्रशिक्षक – क्या सभी गीतों को भजन कहा जा सकता है ?

प्रशिक्षु – ....

प्रशिक्षक– भजन में किस भाव की अधिकता होती है ?

प्रशिक्षु – ....

प्रशिक्षक– भजन में क्या, रागों के कठोर नियम होते हैं ?

प्रशिक्षु– ....

ठुमक चलत राम चन्द्र बाजत पैजनियां
किलक किलक उठत धाय
पड़त भूमि लट पराय
धाय मात गोद लेत, दशरथ की रनियां
ठुमक चलत राम चन्द्र बाजत पैजनियां
विद्रुम से अरूण अधर, बोलत मुदु वचन मधुर
सुन्दर नासिका बीच, लतकत लटकनिया।
ठुमक चलत राम चन्द्र बाजत पैजनियां
तुलसी दास अति आनन्द, निराखि के मुखर बिन्द
रघुवर की छवि समान, रघुबर मुख बनिया
ठुमक चलत रामचन्द्र ....
अरज अंग झरि–झरि विविध भांति सं दुलारी तनम न धन वारि वारि, कहत मुदु वचनिया
ठुमुक चलत राम चन्द्र

स्थाई या मुखड़ा **स्वर लिपि (राग जयजयवन्ती)** **ताल– दादरा**

सा सा नी़ ठु म क x	सा सा रे च ल त 0	नी़ – सा रा ऽ म x	नी़ ध़ प़ चं ऽ द्रं 0
प़ ध़ सा बा ऽ ज x	सा (सारे) ग त (पै ऽ) ऽ 0	ग ग (रे ग) ज नि (या ऽ) x	(म प) म प (ऽ ऽ) ऽ ऽ 0

रे ग रे ठु म क x	सा सा रे च ल त 0	नी – सा रा ऽ म x	नी ध प चं ऽ न्द्र 0

अन्तरा

म म प कि ल क x	ध ध नी कि ल क 0	सां सा नि उ ठ त x	सां – सां धा ऽ य 0
नि नि नि प ड़ त x	ध नी सारें सां भूऽ ऽऽ मि 0	ध सां नी ल ट प x	ध – ध ता ऽ ये 0
नि नि नि धा ऽ य x	नि – नि माँ ऽ तू 0	धनी (सां) नी गो ऽ ऽ द x	ध – ध ले ऽ त 0
रे ग रे द श र x	सा सा सा थ की ऽ 0	ध सा रे ग रं नि यां ऽ x	म प, म प ऽ ऽ ऽ ऽ 0

निर्देश

उपरोक्त भजन में प्रशिक्षु दोनो गन्धार तथा दोनों निषाद का प्रयोग कर राग जय जयवन्ती के स्वरूप की रक्षा करते हुए, शेष सभी अन्तरों को इसी प्रकार गाये–

भजन गाते स्वर भाव पर विशेष ध्यान दे तथा स्वर लय के साथ–साथ भाव के साथ भजन गाने या गवाने का प्रयास करें।

प्रशिक्षु इसी प्रकार , सूर, मीरा, रहीम, नानक, कबीर आदि के भजनों को स्वरलिपि बद्ध कर गा सकते है। भजन, शास्त्रीय संगीत के कठोर नियमों के बन्धन से युक्त रहता है। इसमें प्रशिक्षु मधुर स्वरों का उचित प्रयोग कर सकते हैं।

स्थानीय लोकगीत

" जन समुदाय द्वारा गाये जाने वाले परम्परागत गीतों को हम लोकगीत कहते हैं।" भारत में लोक गीतों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है और जब से भाषा की उत्पत्ति हुई है तब से इन लोकगीतों का प्रादुर्भाव हुआ है।

भिन्न–भिन्न प्रान्तों के लोक गीतों से हमें वहां की राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक , अर्थिक एतिहासिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों की झांकी देखने को मिलती है। उदाहरणार्थ यदि हम राजस्थान के लोकगीतों को ले तो उनसे हमको वहां के राजनीकि, एतिहासिक तथा धार्मिक विचार तथा सामाजिक जीवन का स्पष्ट चित्र मिलता है। महाराणा प्रताप, महाराणा अमर सिंह तथा वहाँ की वीरांगनाओं के बारे में ये लोक गीत हमें बहुत कुछ बतलाते हैं।

बुन्देलखण्ड के लोकगीतों में बाज बहादुर, आल्हा ऊदल एवं महाराष्ट्र के लोकगीतों में शिवाजी तथा पंजाब के लोकगीतों में महाराणा रणजीत सिंह के बारे में ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जिनसे इतिहास कारों को एक अमूल्य निधि प्राप्त हो सकती है।

धार्मिक परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिये हम देवी देवताओं पितरों, व्रत उपवासों तथा सिद्ध पुरूषों के गीतों से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं।

स्थानीय लोकगीतों की विशेषतायें

1. लोकगीत जन समुदाय के गीत होते है अतः किसी व्यक्ति विशेष से इनका सम्बन्ध नहीं होता है।
2. यह पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाई जाती है तथा यथार्थ के अति समीप होते हैं।
3. इनके शब्द अत्यन्त हृदय स्पर्शी होते हैं।
4. लोक गीतों में प्रश्न और उत्तर भी मिलते हैं। इससे आकर्षण और जिज्ञासा बनी रहती है। शंकराचार्य और दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी कृतियों में प्रश्न भी उठाये हैं और उत्तर भी दिये हैं।
5. लोक गीतों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है– टीकों, झुमकड़ों, गोरबन्द, कागासियों, काजलियों, कुंजा, झूला, मोगरा, दंडा (गेद), पीपली, पिलगई, बीछू आदि अनेक विषय लोकगीतों के रहे हैं।
6. भारतीय लोकगीतों का सम्बन्ध समृद्धि के चित्रण से अधिक है उन गीतों में सोना, चांदी, मोती, गजमोती, कजली देश के हाथी, सिन्ध देश के घोड़े की मांग की जाती है।
7. इन लोक गीतों में प्रेम और यौवन के चित्रण भी मिलते हैं।
8. अलग–अलग प्रान्तों में प्रचलित धुने हुआ करती है।

लोकगीतों का महत्त्व

विभिन्न त्योहारों तथा अवसरों पर अलग–अलग गीत प्रचलित है। जैसे–, विवाह के गीत, लड़की के ससुराल विदा होते वक्त गाई जाने वाले गीत, सन्तान के जन्म के समय गायी जाने वाली सोहर, चक्की पीसते हुये चक्की के गीत। इन गीतों का सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से काफी महत्त्व है।

मुख्यतः लोक गीतों का महत्व इस प्रकार है–

1. भावप्रेरक

इन गीतों के अभाव से जीवन शून्य हो जायेगा, भावों के अभाव में मनुष्य में, प्रेम, सहानुभूति, सौहार्द, समाप्त हो जायेगा। दया, ममता, सहानुभूति, संवेदना, सहयोग आदि दैवीय गुण लोकगीतों की ही देन है। अन्यथा मानव क्रूर, निर्दय तथा कठोर हो जाता है।

2. रागात्मक अंश की जागृति में सहायक

लोक गीत रागात्मक अंश को जाग्रत कर जीवन को आनन्द दायक बनाते हैं। ये गीत दुःख को दूर कर देते हैं। जैसे विवाह के गीत, सन्तान के जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों से हमारी प्रसन्नता बढ़ती है।

3. साहित्यांश से युक्त होना

लोक गीतों में साहित्य का अंशभी होता है तथा ये भावयुक्त होते हैं। भाव प्रधान ये लोकगीत किसी भी भाई बहन को विहवल कर देते हैं।

4. सामाजिक महत्व

लोकगीतों में जातियों के साथ अपनत्व व्यक्त हुआ है।" कुम्हार का चाक पूजने के लिये स्त्रियां जाती हैं और गीत गाती है। मालिन की मनुहार को जाती है। रेंगर, दर्जी, सुनार, चमार, लीलगर सभी के साथ लोकगीतों में अपनत्व प्रकट किया गया है।

5. संस्कृति के रक्षक

ये लोकगीत देश की संस्कृति के रक्षक है। त्योहार उत्सव के साथ इनका अभिन्न सम्बन्ध है। ये देश की रीति रिवाज और मौलिकता को बचाये हुय है। लोक गीत भारत की आत्मा है। सौन्दर्य समृद्धि और आदर्श के चित्र इन्होंने हमारे सामने खींचे हैं।

राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, बाबूजी राठौर, तेजाजाट, गोगा, चौहान, आदि यशस्वी वीरों एवं कर्त्तव्यपरायण महापुरूषों के आदर्श चरित्र के बारे में, हमे लोग गीतों के माध्यम से ही ज्ञात होता रहा है। सतियां पर गीत मिलते हैं जो पतिव्रत धर्म की शिक्षा देते हैं। हमारे प्राचीन, शकून, कामण, विश्वास, लोकाचार आदि का ये व्यक्त करते है। इस प्रकार ये परम्परा, संस्कृति तथा इतिहासकी बड़ी पूंजी हैं। यात्रा करते समय थकान दूर करने हेतु, कृषि कार्य में श्रमिक लोग, खेतों में फसल बोती स्त्रियां–– लोकगीत गाते रहते हैं जिससे उनकी थकान दूर होती है।

आर्थिक दृष्टि से पिछड़े आदि वासी लोग इन्हीं गीतों से अपनी चिन्ताओं को और अभावों को भूल जाते हैं तथा आधे पेट भूखे रहकर भी बलिष्ठ और सुखी हैं।

छत्तीस गढ़ का सुआ गीत, नेपाल में 'सोरठी, लयवरी और हाकपारा, हाथरस, मथुरा, आगरा के आस–पास, फागुन में रसिया खूब प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत में झूले के अवसर पर कंजली, चैत वैसाख के महीने में चैती, लावनी, गुजरात का गरवा, बुन्देलखण्ड का लेद गायन लोकगीतों के विभिन्न प्रकार हैं। आगे कुछ लोकगीतों के विषय में चर्चा की जा रही है।

कजली

हिन्दी भाषा के लोक गीतों में यह सर्वाधिक लोक प्रिय है। भादों की कृष्ण पक्ष की तृतीया को स्त्रियों का एक व्रत होता है कजली व्रत, जिसमें कजली देवी की पूजा की जाती है। स्त्रिंया सारी राज जागरण करती हैं तथा सुन्दर श्रृंगार रस प्रधान गीतों को गाकर मनोरंजन करती है। इन गीतों को कजली कहते हैं। कजली का विषय संयोग तथा वियोग श्रृंगार है। झूले पर झूलते हुये 'राधाकृष्ण' इन गीतों के अधिनायक हैं।

उदाहरण

कुंजन बन झूला झूले कृष्ण राधिका ऱानी सावन में।
दमक झुलावे ललना, नवल सयानी सावन में।।
मधुर ताल सुन जन बरसाते पानी सावन में।
फूले कलत कदम्बलता, लपतानी सावन में।।
वह छवि कहत ''सजीले'' सकुचत बानी सावन में।

आज कजलियों में श्रृंगार भावना के साथ देश प्रेम की भावनाओं को भी स्थान प्राप्त है जैसे– देश प्रेमी हरिश्चन्द्र की यह कजली–

'' काहे तू चौका लगाये जय चंदवा
अपने स्वास्थ्य लुभाये काहे चोरी कहवा बुलाये जयचंदवा।
अपने हाथ से अपने कुल के काहे तै जड़वा कराये जयचंदवा।।
फूट के सब फल भारत बोये, बैरी के राह खलाये जयचंदवा।
और बासि तैं आयों विलाने, निज मुंह कजली पुताया जयचंदवा।।

स्वदेश प्रेम की भावना की पुष्टि करते हुये यहाँ देश द्रोही को बुरा भला कहा गया है।

लावनी

आज से पचास वर्ष पूर्व लावनी गीत का प्रचार अधिक था। लावनी की भाषा हिन्दी और उर्दू मिश्रित होती थी क्योंकि लावनी गाने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों हुआ करते थे। कहा जाता है कि लावनी पहले से गढ़ी नहीं होती थी बल्कि स्टेज पर गाते समय गायक बनाता जाता था। इस प्रकार आगे की दो चार पंक्तियां (चरण) टेक के रूप में लावनी में हुआ करती थी और शेष, गायक गाते समय बढ़ाता जाता था। एक प्रसिद्ध लावनी की टेक या उदाहरण प्रस्तुत है।

''सूरत उस माहरूक की, आँख में आपके बसती है।
लाल इबादत से ज्यादा, दुनिया में हुस्न परस्ती है।।''

इसके अतिरिक्त 'महाराष्ट्र' में एक खास प्रकार के गीत को लावणी कहते है जो अधिकतर मराठी भाषा में होता है।

गरवा

गुजरात का गरवा अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसे कुछ लोग 'रास' भी कहते है।। इसे प्रायः गुजरात की स्त्रियां गाती हैं। किसी–किसी गरबे में बारह मासों का वर्णन होता है और प्रत्येक मास के लिये अलग–अलग पद होते हैं। गरवा की भाषा हिन्दी अथवा ब्रज होती है। कोई–कोई गरवा गुजराती भाषा में भी होती है। गरवे का एक उदाहरण प्रस्तुत है।

जावों वाँ हो गिरधारी, जहाँ खट रूत खोई है सारी।।
चित चेत में लगी उदासी, मैने चाहा था खाऊँ फाँसी।।
बाली सारी ये ब्रिज की बासी, यानेपिया बिना प्राण त्याजा।।
जब मगसर फूला चम्पा, तब जियरा मोरा न झपा।।
बिना तारे थराहर कम्पा, चम्पा बरन देह भई कारी।। आदि

उपरोक्त उदाहरण में केवल दो मासों का वर्णन किया गया है। इस प्रकार लोकगीत तो असंख्या हैं तथा भिन्न–भिन्न प्रान्त के भिन्न–भिन्न लोकगीत हैं। यहाँ कतिपय का वर्णन उदाहरण सहित किया गया है।

गतिविधि–

प्रशिक्षु, शेष सभी लोकगीतों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिये सन्दर्भ ग्रन्थों व, सहायक संगीत पुस्तकों का अवलोकन करें, अध्ययन करें। इन लोकगीतों को गाने के लिये शास्त्रीय नियमों का किसी प्रकार कठोर बन्धन नहीं है अतः प्रशिक्षु शब्दों के अनुकूल स्वरों की सहायता से गीतों को गा सकते हैं।

ऋतुओं तथा मौसम सम्बन्धी गीत

भारतवर्ष में भिन्न–भिन्न अवसरों पर भिन्न–भिन्न प्रकार के **गीत** गाने की परम्परा है। ऋतुप्रधान इस देश में विभिन्न ऋतुओं व मौसम में भी कुछ विशेष गीत गाने का प्रचलन है यद्यपि में ऋतुओं से सम्बन्धित बहुतायत में नहीं प्राप्त होतें तथा बहुत अधिक प्रचलित नहीं है। उदाहरण के रूप में बसंत ऋतु पर आधारित एक गीत स्वरलिपि सहित प्रस्तुत की जा रही है।

गीत के शब्द

आया है ऋतुराज निराला, आया है ऋतुराज।
गेंदा और गुलाब खिले हैं, भंवरो गुनगन गाते हैं,
पुरवैया के प्यारे झोंके, सबको मस्त बनाते हैं।
सबको मस्त बनाने वाला, आया है ऋतुराज।
पहन वसन्ती कपड़ा सरसों, खेतों में लहराते है।
आमों की डाली पर कोयल, पंचम स्वर में गाती है।
पंचम राग सुनाने वाला, आया है ऋतुराज। (गीत अज्ञात)

स्वरलिपि स्वर लिपि (अष्ट राग मिश्रण) ताल– कहरवा या त्रिताल

स्थाई

नि – सां रे आ ऽ या ऽ x	नी धनिध, पप है ऽऽऽ, ऋ तु 3	ध प, ध – म, म रा, ऽऽ ऽज नि x	म मग, रे – रा ऽ ऽ, ला ऽ 2
सा – रे – आ ऽ या ऽ 0	ग – म म है ऽ ऋ तु 3	प – – – रा ऽ ऽ ऽ x	– – – – ऽ ज ऽ ऽ 2

अन्तरा

ग – म – गें ऽ दा ऽ x	म ग ग म औ ऽ र गु 3	नि – ध नी ला ऽ ऽ ब खि x	सां रें, सां नि, सां ला ऽ, हैं ऽ, ऽ 2
सां सां नी प भं व रे ऽ 0	मप, म, रे रे रे गुन, ऽऽ गु न 3	रें – रें – गा ऽ ते ऽ x	सां – नि सां, नि प, हैं ऽ ऽऽ, ऽ ऽ, 2
म ग म – पु र वै ऽ 0	रे ग रे सा या ऽ के ऽ 3	नि़ सा ध़ नी प्या ऽ रे ऽ x	रे – रे – झों ऽ के ऽ 2
प प प – स ब को ऽ 0	1 म प ग म म ऽ स्त ब 3	सां ध ध – ना ऽ ते ऽ x	ध – – – हैं ऽ ऽ ऽ 2
सां सां सा नि स ब को ऽ 0	ध – म प म ऽ स्त ब 3	ध – म ग ना ऽ ने ऽ x	म – ग म ग, रे सा, वा ऽ, ला ऽऽ, ऽऽ, 2
रे – म प आ ऽ या ऽ 0	ध सां रे ग, है ऽ ऋ तु 3	रें सां, रे सां रा ऽ, ऽ ऽ ऽ x	– – – सां ऽ ऽ ऽ ज 2

निर्देश– इस गीत का दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार गाया जायेगा। प्रशिक्षु अवश्य जान लें कि इस गीत में स्थाई में राग देश और काफी तथा अन्तरे में क्रमशः राग बहार, सारंग, जयजयवन्ती, हमीर, खमाज और सिंदूरा का मिश्रण है।

प्रशिक्षु स्वतन्त्र है अपनी इच्छानुसार राग में उपरोक्त गीत को स्वरलिपि बद्ध करने के लिये। इसी प्रकार से, वर्षा ऋतु के गीत जैसे, "आई है बरसात सुहानी, आई है बरसात सुहाई" सावन मास का गीत "सावण सुरंगो सर सावणों, भादवों, सुरंगो मन भावणों" आदि ऋतु व मौसम से सम्बन्धित गीत हैं।

गतिविधि

प्रशिक्षुओं को चाहिये कि वे विभिन्न रचनाओं का व स्वरलिपि का संकलन, पुस्तकालयों, रेडियों या दूरदर्शन से करें तथा स्वयं गाये वे छात्रों को उत्साह के साथ गवायें।

प्रशिक्षु सदैव किसी स्वर वाद्य का उपयोग करें अन्यथा स्वर स्थिर नहीं रहेंगे तथा गीत बेसुरा हो जायेगा अतः विद्यालय या सम्बद्ध क्षेत्र में उपलब्ध स्वर वाद्य जैसे, हारमोनियम, स्वर पेटी या कैसियो की सहायता से गीत को सुमधुर कंठ से गा कर छात्रों को गीत सिखायें। विद्यार्थियों को समूह में नयी–नयी रचनाये सिखाकर गवाने का प्रयास करें और उन्हें नित्य अभ्यास करने का प्रेरित करें।

राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी देश गीत

जिन गीतों के द्वारा देश के प्रति समर्पण, बलिदान, एकता तथा भाईचारा आदि की प्रेरणा मिलती है। वे राष्ट्रीय भक्ति गीत या देश भक्ति गीत कहलाते हैं। ये गीत वीर रस से ओत–प्रोत होते हैं।

देश गीतों का मुख्य सन्देश यही है कि हमस ब जाति क्षेत्र, भाषाकी संकीर्णता को भूलकर, राष्ट्र गौरव हेतु कार्य करने की भावना स्वयं में उत्पन्न करें।

राष्ट्रीय एकता गीत

हम बंगाली, हम पंजाबी, गुजराती मद्रासी हैं,
लेकिन इन सबसे पहले केवल भारतवासी है।
हम सब भारतवासी हैं।
हमे सत्य के पथ पर चलना, पुरखों ने सिखलाया है।
हम उन पर ही चलते आये, जो उनने दिखलाया है।।
हमस ब सीधी सच्ची बाते, करने के अभ्यासी है।
हम सब भारतवासी हैं।
हम अपने हाथों में लेकर, अपना भाग्य बनाते हें।
मेहनत करके बंजर धरती पर सोना उपजाते हैं।
पत्थर को भगवान बना दे, हम ऐसे विश्वासी हैं।
हम सब भारतवासी हैं।
वह भाषा हम नही बोलते, बैर भाव सिखलाती जो
कौन समझता नहीं बाग में, बैठी कोयल गाती जो
जिसके अक्षर भरे प्रेम से, हम वो भाषा भाषी हैं।
हम सब भारत वासी है।

स्वर लिपि   ताल– कहरवा

सा‿ सा सा नि़ हम‿ बं गा ऽ x	रे – – – लीं ऽ ऽ ऽ 0	ग–‿ ग ग रे हम‿ पं जा ऽ x	सां – – – बी ऽ ऽ ऽ 0
सा‿ सा सा सा हम‿ बं गा ली x	रे–‿ रे रे रे हम‿ पं जा बी 0	मम‿ म म ग गुज‿ रा ती मद्र x	रे रे सा – रा सी हैं ऽ 0
प पप‿ मम‿ मम‿ ले किन‿ हम‿ इन‿ x	गग‿ ग रे–‿ सा सब‿ से‿ पह‿ ले 0	सा सासा‿ रे–‿ रे –‿ के वल‿ भा रत‿ x	ग रे सा – वा सी हैं ऽ 0
सा‿ ग‿ म प प‿ हम‿ स ब‿ भा रत‿ x	म रे सा – वा सी हैं ऽ 0		
मम‿ –म‿ म म हमें‿ ऽ स‿ त्य के x	प–‿ प–‿ प –‿ प पथ‿ पर‿ चल‿ ना 0	नि –‿ नि ध प प‿ पुर‿ खो ने सिख‿ x	सां सां सां – ला या है ऽ 0
सां‿ सां–‿ सा–‿ नी हम‿ उस‿ पर‿ ही x	ध–‿ ध प प चल‿ ते आ ये 0	सा ग–‿ म प –‿ जो उन‿ ने दिख‿ x	ध प म – ला या है ऽ 0
सा –‿ ग –‿ म प हम‿ सब‿ सी धी x	नि नि प प स च्ची बातें 0	सा –‿ ग म प कर‿ ने के अ x	म रे सा – भ या सी हैं ऽ 0
सा‿ ग –‿ म प प‿ हम‿ सब‿ भा रत‿ x	म रे सा – वा सी हैं ऽ 0	शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गये जायेंगे।	

उपरोक्त गीत के शब्दकार श्री निरंकार देव सेवक तथा संगीतकार प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव है।

निर्देश– प्रशिक्षु उपरोक्त देशगीत को क्रिया गीत के रूप में करवायें। शब्दों के अनुकूल भिन्न–भिन्न देश की वेशभूषा से छात्रों को सज्जित कर Action Song के रूप में गवायें।

गतिविधि

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को प्रेरित करें कि वे विभिन्न प्रकार के देशगीतों या राष्ट्रीय एकता सम्बन्धित गीतों को छात्रों से भिन्न–भिन्न क्रियाओं द्वारा करवाये। जैसे भिन्न–भिन्न वेशभूषा, हाथों में छोटे–छोटे ध्वजों का प्रयोग करना, वेशभूषा में तिरंगे का पुट देना आदि का प्रयोग कर एक राष्ट्रप्रेम, देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत वातावरण बनायें। ऐसे जोश पूर्ण माहौल में स्वतः ही देशभक्ति का जब्वा, स्वर व लय के माध्यम से प्रस्फुटित होता है। अतः Drun के साथ तेज आवाज में जोश के साथ वीर रस का संचार करते हुये देश गीत को गाएं तथा समूह में गवाने का प्रयास करें।

राष्ट्रगान

राष्ट्रगान की रचना स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर के द्वारा की गई थी। भारत के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रगान कठस्थ होना चाहिये तथा श्रद्धा के साथ उचित धुन में गाया जाना चाहिये।

राष्ट्रगान गाते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. राष्ट्रगान को केवल 'गणतन्त्र दिवस', स्वतन्त्रता दिवस आदि विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों पर गाया जाता है।
2. संसद में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति पर भी यह गाया जाता है।
3. गीत के प्रारम्भ होने से समापत होने तक प्रत्येक गायक का उपस्थित व्यक्ति को सावधान की स्थिति में खड़ा रहना अनिवार्य है।
4. राष्ट्रगान के गाने में 48 से 52 सेकेण्ड का समय लगता है।
5. इसमें सिर्फ 'मराठा' शब्द में तीव्र मध्यम का प्रयोग हुआ है। शेष सभी स्वर शुद्ध हैं।
6. यह कहरवा या तीनताल के साथ गाया जाता है।

प्रशिक्षुओं को सुविधा हेतु राष्ट्रगान की स्वरलिपि नीचे दी जा रही है।

गीत के शब्द

जन–गण–मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब–सिन्धु–गुजरात–मराठा
द्राविड उत्कल बंग।
विन्ध हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग।
तब शुभ नामे जागे
तब शुभ आशिष माँगे।
गाहे तब जय गाथा
जनगण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विद्याता
जय हे, जय हे, जय हे।
जय, जय, जय जय हे।

स्वरलिपि

स रे ग ग	ग ग ग ग	ग ग ग ग	रे ग म म
ज न ग ण	म न अ धि	ना ऽ य क	ज य हे ऽ
x	o	x	o
ग ग ग ग	रे रे रे रे	नी रे स स	स स स स
भा ऽ र त	भा ऽ ग्य वि	धा ऽ ता ऽ	ऽ ऽ पं ऽ
x	o	x	o
			1
प प प प	प प प प	प प प प	म ध प म
जा ऽ ब सिं	ऽ न्धु गु ज	रा ऽ त म	रा ऽ ठा ऽ
x	o	x	o
म म म म	म म म म	रे म ग –	ग ग ग ग
द्रा ऽ वि ड़	उ त क ल	बं ऽ ग ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
x	o	x	o
ग ग ग रे	ग ग ग रे	प प प प	म म म म
वि ऽ न्ध्य हि	मा ऽ च ल	य मु ना ऽ	गं ऽ गा ऽ
x	o	x	o
ग ग ग ग	रे रे रे रे	नी रे स –	– – – –
उ ऽ च्छ ल	ज ल धि त	रं ऽ ग ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
x	o	x	o
ग ग ग ग	ग – ग ग	रे ग म –	– – – –
त च शु भ	ना ऽ मे ऽ	जा ऽ गे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
x	o	x	o
ग म प प	प प म ग	रे म ग –	– – – –
त ब शु भ	आ ऽ शि ष	मां ऽ गे ऽ	ऽ – –
x	o	x	o
ग ग ग ग	रे रे रे रे	नी रे सा –	– – – –
गा ऽ हे ऽ	त व ज य	गा ऽ था ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
x	o	x	o
			।

प प प प	प प प प	प प प प	म ध प म
ज न ग ण	मं ऽ ग ल	दा ऽ य क	ज य हे ऽ
x	o	x	o
म – म म	ग – ग ग	रे म ग –	ग ग सां नी
भा – र त	भा ऽ ग्या वि	धा ऽ ता ऽ	ऽ ऽ ज य
x	o	x	o
स – – –	– – नी ध	नी – – –	– – ध प
हे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज य	हे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज य
x	o	x	o
ध	– – – –	स स रे रे	ग ग रे ग
हे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ज य ज य	ज य ज य
x	o	x	o
म – – –	– – – –		
हे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
x	o		

निर्देश

प्रशिक्षु राष्ट्रगान को, स्वर्रालिपि का ध्यान रखते हुये हारमोनियम पर बजायें तथा सभी को सावधान की मुद्रा में खड़ा करवा के 48 से 52 सेकेण्ड के अन्दर राष्ट्रगान सम्पन्न करवायें। आवश्यक नहीं है कि तबला वाद्य का प्रयोग किया जाये यदि विद्यालय में ड्रम है तो ड्रम पर मात्र लय देते हुए राष्ट्रगान गवाया जा सकता है।

प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं को राष्ट्रगान सिखाते समय, राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान के बारे में अवश्य अवगत करायें। राष्ट्रगान की धुन कानों में पड़ते ही जो जहां जैसी स्थिति में हो, अवश्य ही सावधान की मुद्रा में खड़े हो तथा राष्ट्रगान समाप्त होने के पश्चात ही विश्राम की मुद्रा में वापस आयें।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

1. ईश्वर की संगीतमयी आराधना सर्वोपरि मानी गयी है।
2. जिन गीतों में ईश्वर का गुणमान या ईश्वर की वन्दना वे भजन कहलाते हैं। ये रचनायें भक्ति रस प्रधान होती है।
3. जन समुदाय द्वारा गाये जाना वाला पारम्पारिक गीत लोकगीत कहलाता है।
4. लोकगीत विभिन्न प्रकार से मानव जीवन को प्रभावित करते हैं।

5. कजली, लावनी, गरवा आदि कुछ प्रसिद्ध लोकगीतों को काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई है।
6. विभिन्न ऋतुओं तथा विभिन्न मौसमों में गाये जाने वाले गीत ऋतु तथा मौसम सम्बन्धी गीत कहलाते हैं इनमें उस समय के ऋतु का वर्णन रहता है।
7. देश के प्रति समर्पण, बलिदान, एकता तथा भाई चारे की भावना से ओत–प्रात गीत, देश गीत या देशभक्ति गीत कहलाता है।
8. संसद में, विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों में, तथा गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में यह गीत गाया जाता है। राष्ट्रगान की रचना स्वर्गीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर के द्वारा की गई थी।

बोध प्रश्न

1. वन्दना, प्रार्थना स्तुति से क्या समझते हैं। उदाहरण सहित समझाइयें ?
2. भजन किसे कहते हैं ? यह गीत से किस प्रकार भिन्न हैं ?
3. लोक गीत का अर्थ तथा विशेषतायें बताइयें ?
4. भारत में लोकगीतों का क्या महत्व हैं ? कुछ प्रचलित लोकगीतों के बारे में बताइयें ?
5. गरवा किंस प्रान्त का है ?
6. देश गीत या राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित गीतों का मुख्य सन्देश क्या है ?
7. राष्ट्रगान की रचना किसने की ?
8. राष्ट्रगान गाते समय किन–किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिये ?

सन्दर्भ साहित्य

1. राग परिचय, भाग, 1, 2 लेखक श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
2. हिन्द छात्र गान – श्री महावीर प्रसाद 'मुकेश'
3. कला एवं संगीत शिक्षण – राधा प्रकाशन मन्दिर
4. संगीत शास्त्र दर्पण – श्रीमती शान्ति गोवर्धन

भाग– चार

भारतीय संगीतज्ञों का जीवन परिचय

इतिहास के पन्नों में एक समय वह भी था जब संगीत अपना स्वर्ण युग समाप्त कर महा गर्त में पड़ा था। कलाकार दुर्दशा का शिकार थे। धर्म भीरू समाज में धर्म गुरूओं की कुंठित विचारधारा ने संगीत के स्वरूप को बदल दिया था। चाटुकार दरबारियों की अधिकता में संगीत रूपी पुष्प की सुगंध, मानव सदृश भ्रमरों का जीवन सुरक्षित करने में अपने को असहाय पा रही थी।

संगीत सम्राट तानसेन तथा पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जैसे महान संगीतज्ञों का संगीत जगत को दिया

संगीत की ध्वनि सुदूर दक्षिण भी जा पहुंची। गान रस प्रिय भ्रमरों में संगीत श्रवणीयता का भाव जगाने के लिये, पंडित भातरखण्डे तथा पंडित पलुस्कर रूपी मूर्त संवेदना प्रकट हुई, जिन्होंने अपनी अथक प्रयास व श्रद्धा से गायन, वादन के सुन्दर तत्वों को चुनकर गुलदस्ते का निर्माण किया। वैसे तो संगीत जगत को समय–समय पर विभिन्न संगीतज्ञों, गायकों, वादकों ने अपनी विद्वता व प्रतिभा के पुष्प से सुसज्जित किया जिनमें, संगीत सम्राट तानसेन, अमीर खुसरों, स्वामी हरिदास जी, गोपाल नायक, पं0 शारंगदेव, पं0 विष्णुनारायण भातरखण्डे, पं0 विष्र्णुदिग्म्बर पलुस्कर आदि का नाम उल्लेखनीय है। प्रस्तुत है संगीत सम्राट तानसेन तथा पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी का जीवन परिचय एवं उनकी रचनाएं।

संगीत सम्राट तानसेन

भारत में संगीत के इतिहास में तानसेन उस प्रखर दैदी व्यमान सूर्य के समान हैं जिन्होंने अपनी संगीत कला के आलोक से सम्पूर्ण धरा का प्रकाशित किया है। संगीत क्षेत्र में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो तानसेन के नाम से अपरिचित हो।

जन्म परिचय

किंवदन्ती है कि उनके पिता मकरन्द पाण्डे को मुहम्मद गौस नामक फकीर के आशीर्वाद स्वरूप एक पुत्र उत्पन्न हुआ। सम्वत् 1532 में ग्वालियर के निकट बेहत ग्राम में जन्में पुत्र का नाम तन्ना मिश्र रखा गया। ये अपनी पिता के एकमात्र सन्तान थे।

बाल्यावस्था

बचपन में तानसेन बड़े नटखट तथा उदण्ड थे। इनमें दूसरों की नकल करने की अपूर्व क्षमता थी। पशु–पक्षी तथा जंगली पशुओं की बोलियों की नकल करके वह लोगों को डराया करते थे। एक बार स्वामी हरिदास जी को तानसेन ने उसी प्रतिभा के बल पर प्रभावित कर दिया। स्वामी हरिदास ने तानसेन को उनके पिता से संगीत शिक्षण के लिये माँग लिया और अपने साथ वृन्दावन ले गये।

संगीत शिक्षा

करीब दस वर्ष तक तानसेन ने स्वामी हरिदास जी से संगीत शिक्षा ग्रहण की पिता की अस्वस्थता का समाचार जानकर वह ग्वालियर आ गये एवं उनकी मृत्यु के बाद मुहम्मद गौस के पास रहने लगे। ग्वालियर के राजा मानसिंह की रानी मृगनयनी स्वयं एक कुशल गायिका थी उनके सानिध्य में भी तानसेन संगीत शिक्षा देते रहे। शनैःशनैः तानसेन की ख्याति चारों फैल गई।

जीवनयापन

तानसेन एक उच्च कोटि के गायक थे। रानी मृगनयनी ने अपनी एक दासी हुसैनी से उनका विवाह कर दिया। बाद में तानसेन के चार पुत्र क्रमशः सूरत सेन, शरतसेन, तरंगसेन तथा विलास खां एवं एक पुत्री सरस्वती का जन्म हुआ। तब तक वे रींवा नरेश रामचन्द्र के यहाँ रह कर संगीत साधना करते और दरबार से अपना जीवन यापन करने लगे थे।

कार्यक्षेत्र

संगीत सम्राट अकबर ने उनकी ख्याति सुनी। वे ऐसे गुणी कलाकार को अपने दरबार में लाने को व्याकुल थे। अकबर ने यह इच्छा राजा रामचन्द्र के समक्ष रखी, रामचन्द्र ने सहर्ष तानसेन को अकबर के पास भेज दिया। अकबर ने अपने दरबार के नौ रत्नों में स्थान देकर तानसेन को सम्मानित किया।

धर्म परिवर्तन

कहा जाता है कि हुसैनी से विवाह करने, मुहम्मद गौस के साथ रहने तथा अकबर के दरबारी होने के नाते तानसेन ने मुस्लिम धर्म अपना लिया था। कुछ का कहना है कि तानसेन मुसलमान हुये ही नही। उन्होंने फकीर गुलाम गौस की स्मृति में नवीन रागों के नाम के आगे 'मियाँ' शब्द जोड़ दिया था जैसे मियाँ मल्हार आदि।

कार्य

1. संगीत सम्राट तानसेन ने कई ध्रुपदों की सूचना की एवं उन्हें स्वर बद्ध किया।

2. तानसेन ने अनेक राग जैसे दरबारी कान्हड़ा मियां की सारंग मियां मल्हार, मियाँ की तोड़ी तथा दीपक आदि रागों की रचना की।

3. साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि के कई गीतों की रचना की

4. शास्त्रीय दृष्टि से परिपक्व ध्रुपद गायकी को प्रतिष्ठा दिलवाई।

विशेष घटना

एक बार दुष्ट प्राकृति के लोगों के बहकावे में आकर अकबर ने तानसेन से दीपक राग गाने की जिद की। तानसेन ने अकबर को समझाने का प्रयत्न किया परन्तु अकबर नही माने, फलस्वरूप तानसेन को दीपक राग गाना पड़ा, जिसकी वजह से दरबार में ज्वालयें उठने लगी, ताप बढ़ गया तथा तानसेन का शरीर दाह से व्याकुल हो गया। कहा जाता है कि उनकी पुत्री सरस्वती ने 'मेघ' राग गाकर वर्षा

कराई तब तानसेन की जान बची। तानसेन एक महान गायक थे परन्तु अकबर के पूछने पंर उन्होंने स्वामी हरिदास को इस धरा का सर्वश्रेष्ठ गायक बताकर अपनी विनम्रता और सत्यनिष्ठा का परिचय दिया।

मृत्यु

तानसेन की मृत्यु सन् 1585 ईस्वी में दिल्ली में हुई कहा जाता है कि ग्वालियर में गुलाम गौस की कब्र के पास उनकी समाधि बनाई गई। संगीताकाश में तानसेन का नाम सदा अजर अमर रहेगा।

गतिविधि

प्रशिक्षक, प्रशिक्षुओं से तानसेन के विषय में अधिकाधिक तथ्य एकत्रित करने के लिये प्रेरित करें। लिखित सामग्री के अतिरिक्त तानसेन के ऊपर बनी फिल्मों को दिखाकर भी, रोचक तथ्य का संकलन करने को निर्देशित करें। तानसेन के समकालीन गायक बैजूबावरा के बारे में बतायें ताकि उनकी श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया जा सकें।

पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर

जन्म परिचय

संगीत जगत के उस दैदीप्यमान नक्षत्र को जो अपने छोटे से जीवन से ही संगीत जगत को रत्नविभूषित कर गये, उन्हें पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के नाम से जाना जाता है–

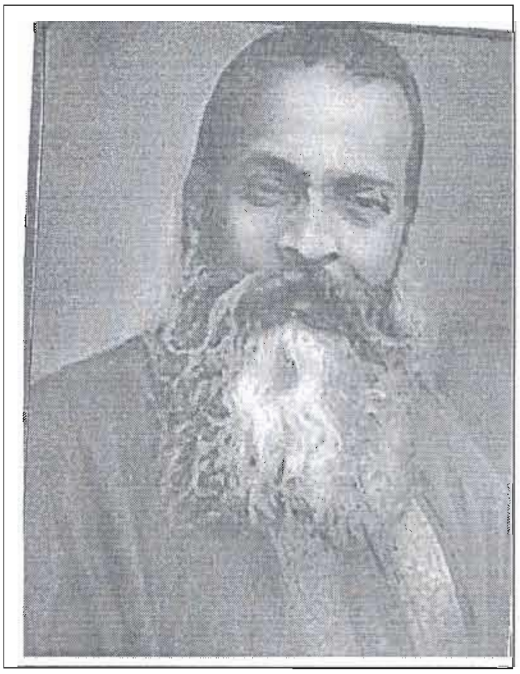

ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक संगीजज्ञ पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर का जन्म 18 अगस्त, 1872 को श्रावण पूर्णिमा के दिन कुरून्दवाड़ रियासत के बेलगाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित दिगम्बर गोपाल पुलस्कर था और माता का नाम गंगाबाई था।

बाल्यकाल और शिक्षा

बालक विष्णु की स्कूली शिक्षा प्रारम्भ होने के कुछ दिन बाद ही दीपावली पर घटित एक दुर्घटना के कारण आँखो की रोशनी चली गई और उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। परिणाम स्वरूप अध्ययन बन्द कराके पिता ने इन्हें संगीत सिखाना प्रारम्भ कर दिया। इन्होंने मिरज के पंडित बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर से संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की।

कार्यक्षेत्र और जीवन यापन

सर्वप्रथम मिरज रियासत के राजा के यहां उन्हें राजाश्रम प्राप्त हुआ, परन्तु एक कार्यक्रम में अपने गुरू को निमान्त्रित न किये जाने पर इन्हें अपरा दुख हुआ। अतः आप भारतीय संगीत और संगीतज्ञों की दशा सुधारने के लिये भ्रमण पर निकल पड़ें।

सतारा, बड़ौदा, काठियावाड़, जूनागढ़, आदि में सफल कार्यक्रम किया। पंजाब में गन्धर्व विद्यालय की स्थापना की तभी पिता की मृत्यु का समाचार मिला, किनतु कार्य की अधिकता की वजह से जाना स्थागित कर दिया।

कार्य

1. संगीत विद्यालय– संगीत के प्रचार–प्रसार के लिये कई स्थानों पर संगीत विद्यालय खोले। प्रथम संगीत विद्यालय की स्थापना 1901 में लाहौर में हुई थी, जिसे गांधर्व महाविद्यालय के नाम से जाना जाता है।

स्वरलिपि

पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने संगीत को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिये स्वरलिपि पद्धति की रचना की जो कि उनके नाम से सम्बद्ध है।

पुस्तकें–

इन्होंने छोटी बड़ी कुल मिलाकर 50 से अधिक पुस्तकें लिखी। जिनके नाम हैं– संगीत बालप्रकाश, बालबोध, 20 भागों में राग प्रवेश, संगीत शिक्षक, महिला संगीत आदि।

मासिक पत्रिका

संगीत प्रचार प्रसार के लिये ''संगीताम्रत प्रवाहं नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया।

शिष्यगण

आश्रम प्रणाली के अनुसार लगभग 100 शिष्यों को तैयार किया था, जिनमें मुख्य हैं बी0आर0देवधर, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, स्व0 वी0ए0 कशाल्कर, वी0एन0 ठाकुर आदि। इन्होंने नासिक में ''रामनाम आधार'' आश्रम की स्थापना की।

मृत्यु

निस्वार्थ भाव से संगीत सेवा करते हुये सन् 1931 में इन्होंने अपने प्राणों को उत्सर्ग कर दिया। इस महान संगीत प्रचारक को आज भी भुलाया नहीं जा सकता है।

गतिविधि

प्रशिक्षु पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की रचनाओं तथा स्वरलिपि का अध्ययन करें। स्वरलिपि पद्धति में पं0 विष्णु नारायण भातरखण्डे द्वारा निर्मित स्वलिपि पद्धति (उत्तर भारतीय स्वरलिपि पद्धति) तथा पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर द्वारा निर्मित स्वरलिपि पद्धति (दक्षिण भारतीय स्वरलिपि

पद्धति) का तुलनात्मक अध्ययन करें तथा उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय स्वरलिपि के बारे में चर्चा करें–

प्रशिक्षु पुस्तकालय से पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर जी से सम्बन्धित विषय सामग्री तथा चित्राादि का संकलनकर चित्र सहित जीवनी लिखें।

प्रशिक्षु तानसेन व पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के अतिरिक्त अन्य महान संगीतज्ञों का जीवन परिचय व उनसे सम्बन्धित तथ्यों का संकलन करें।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

1. तानसेन अकबर के नवरत्नों में सर्वश्रेष्ठ थे।
2. तानसेन के बचपन का नाम तन्ना मिश्र था।
3. तानसेन ने स्वामी हरिदास जी से संगीत शिक्षा प्राप्त की।
4. तानसेन ने कई ध्रुपदों की रचना की तथा उन्हें लिपिबद्ध किया।
5. तानसेन ने, मियाँ की ताड़ी, मियाँ मल्हार दरबारी कान्हड़ा, दीपक, मियाँ की सारंग जैसे कई रागों की रचना की।
6. तानसेन का जनम सम्वत् 1532 ईस्वी ग्वालियर के वेहत नामक ग्राम में हुई तथा मृत्यु सन् 1585 ईस्वी में दिल्ली में हुई।
7. पंडित विष्णु दिगम्बर, पलुस्कर का जन्म 18 अगस्त, 1872 को श्रावण पूर्णिमा के दिन कुरून्दवाड रियासत के बेलगांव में हुआ था।
8. एक दुर्घटना में इनकी आँखों की रोशनी चली गई थी।
9. आपने मिरज के पंडित बालकृष्ण बुआ इचलकरं जीकर से संगीत शिक्षा प्राप्त की।
10. आपने संगीत विद्यालय खोले, पुस्तकें लिखों तथा स्वरलिपि पद्धति की रचना की।
11. पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर जी का देहावसान सन् 1931 में हुआ।

बोध प्रश्न

1. तानसेन के बचपन का नाम क्या था ?
2. तानसेन का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
3. सम्राट तानसेन ने किनसे संगीत शिक्षा प्राप्त की थी ?
4. तानसेन ने किन–किन रागों की रचना की ?
5. दीपक राग के गाने का तानसेन पर क्या प्रभाव पड़ा ?
6. पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर जी का जन्म कहाँ व कब हुआ था ?
7. पंडिज ती ने संगीत शिक्षा किससे प्राप्त की ?

8. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी का संगीत जगत में क्या योगदान है ? सविस्तार बतायें ?

9. पुस्तकों के अतिरिक्त इन्होंने और किस विशेष दान से इन्होंने संगीत जगत को धनी किया है ?

10. इनके कुछ विशेष शिष्यों के नाम बताइये ?

11. भारतीय संगीत में संगीत गायन, वादन में प्रसिद्ध विभिन्न संगीतज्ञों के नाम बताइये?

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राग परिचय भाग– 1, 2 प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
2. कला एवं संगीत शिक्षण – राधा प्रकाशन मन्दिर
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्रीमती शन्ति गोवर्धन

भाग– 5

लोकनृत्य

मनोरंजन की दृष्टि से लोकनृत्य भी एक महत्ववपूर्ण विधा है। किसी भी समाज या अंचल के लोकनृत्य में अपनी विशेषता होती है। उत्तर भारत लोकनृत्यों से भरा है। इन नृत्यों में स्वाभाविकता छूती रहती है, कृतिमता नहीं रहती है। मनुष्य के ह्रदय में उपजंते भावों को सरलता से व्यक्त करना ही उनकी विशिष्टता है।

> लोकनृत्य, स्थानीय नृत्य, भावनृत्य, समसामयिक समस्याओं से पाठ्यवस्तु से एवं देशभक्ति से सम्बन्धित नाटक करवाना विभिन्न प्रकार के नृत्यों का वर्णन।

चर्चा बिन्दु

प्रशिक्षक निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें–

प्रशिक्षक प्रश्न– सामने दिये गये चित्र में स्त्रियां क्या कर रही हैं ?

प्रशिक्षु– ....।

प्रशिक्षक– इन स्त्रियों के हाथ में क्या है ?

प्रशिक्षु– ....।

प्रशिक्षक– यह नृत्य किस प्रान्त का प्रतीत हो रहा है ?

प्रशिक्षु–..।

प्रशिक्षक– यह शास्त्रीय नृत्य है या लोक नृत्य ?

प्रशिक्षु–..।

प्रशिक्षु के द्वारा दिये गये उत्तरों के आधार पर प्रशिक्षक सम्बन्धित चित्र में नृत्य शैलों की चर्चा करने से पूर्व, लोक नृत्य के विषय में चर्चा करेंगे। ''लोकनृत्य किसी भी संस्कृति की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। विभिन्न समाज या अंचलों के लोकनृत्य में अपनी विशेषता होती है। इस विशेषता के कारण ही आंचालिक, या लोकगीत पहचाने जाते हैं। विशेषताओं के आधार पर ही लोक नृत्यों के नाम लेने मात्र से ही उनका साकार स्वरूप आँखों के सामने आ जाता है।

जैसे– भांगड़ा नृत्य का नाम सुनते ही हमारे समक्ष सिख भाई तहमद और कुर्त्ते में थिरकते हुये, और हाथ में चंग लेकर, स्वर आलापते दिखाई पड़ते हैं।

जहां समाज में बड़ी विविधतायें हैं, वहाँ लोक गीत और लोक नृत्यों में बड़ी एकता है।

उदाहरण में दिया गया चित्र गुजरात का प्रसिद्ध डंडिया लोक नृत्य है। इससे हाथों में छोटी–छोटी डण्डियों को लेकर समूह में नृत्य किया जाता है। नीचे भारत के कुछ प्रसिद्ध लोकनृत्यों का वर्णन किया जा रहा है– उत्तर भारत के प्रत्येक प्रान्त में सुन्दर –सुन्दर लोकनृत्य प्राप्त होते हैं जैसे– गुजरात में गरबा और गरबी, पंजाब में भांगड़ा, कुमांयू प्रदेश में छपेली नृत्य, बंगाल और असम का शिकारी नृत्य तथा राजस्थान का धूमर नृत्य आदि।

गरबा नृत्य

यह नृत्य गुजरात प्राप्त का एक लोक़प्रिय नृत्य है। इससे केवल स्त्रियां सामूहिक रूप से नृत्य करती हैं। पुरुष भाग नहीं लेते हैं। जिस नृत्य में पुरुष भाग लेते हैं, उसे गरबी नृत्य कहते हैं। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से यह नृत्य गुजरात के घर–घर में तथा गांव–गांव में प्रारम्भ हो जाता है शरद ऋतु की सुहावनी रात में ताली बजाती हुई स्त्रियों का नृत्य और साथ में गरबा गीत बड़ा सुहावन लगता है।

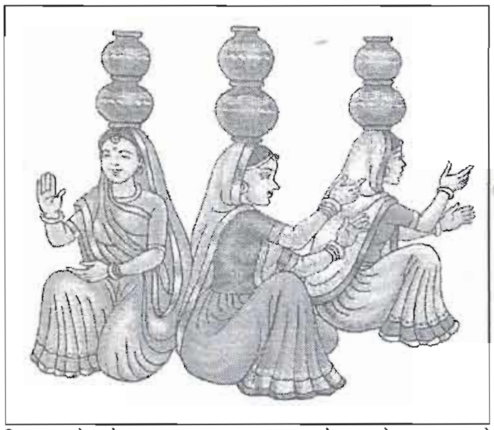

उस दिन पूजा का एक घट 'गरबा का घट' सजाया जाता है, उसमें फूल पत्तियाँ बना कर उसके बीच में घी का दीपक जलाया जाता है। इस घट को गरबी कहते हैं। प्रथम नवरात्र को प्रत्येक घर में 'गरबी' को सजाया जाता है। रात्रि में समस्त स्त्रियां अपने–अपने कामों से निवृत होकर गरबी को एक स्थान पर रखकर, उसके चारों ओर एक गोल घेरा बनाते हुये काफी देर तक 'गरबा' नृत्य करती हैं।

नृत्य विधि

इस नृत्य मंडली की एक नायिका होती है। गीत की पहली पंक्ति पहले वह गाती है तत्पश्चात अन्य स्त्रियां गाती है। नर्तकियां पहले एक ओर झुकती हैं फिर दूसरी ओर नर्तकियां पैर पटकने के साथ–साथ हाथों से ताली बजाती हैं। गीत के साथ–साथ नृत्य का यह कार्यक्रम घण्टों चलता रहता है। उसके साथ ढोलक की संगत की जाती हैं। हाथों से ताली, पैरों की थाप कंकण और झांझ की झंकार लय का साथ देती हैं।

नृत्य के उपरान्त प्रसाद बांटा जाता है जिसे ''सुलहानी'' कहते हैं। इसी प्रकार नौ दिनों तक यह नृत्य चलता रहता है। अन्तिम दिन 'गरबो' घट नदी में विसर्जित कर दी जाती है।

विशेष–

वैसे तो गरबा गुजरात की देन है परन्तु आजकल गरबा अनेक रूपों में उनके राज्यों में प्रचालित है जैसे–महाराष्ट्र में 'गोघा' उत्तर प्रदेश में 'रास' तथा आन्ध्र में 'कोलाटम' आदि नृत्यों के नाम से यह प्रसिद्ध है।

भांगड़ा नृत्य

वर्तमान समय में यह पंजाब में अत्यन्त लोकप्रिय है। भांगड़ा नृत्य वीरता प्रधान सामूहिक नृत्य है। अतः इसमें लय की प्रधानता रहती है।

चर्चा बिन्दु

प्रशिक्षक– चित्र में लोगों की वेशभूषा देख कर आपको किस प्रान्त की याद आती है ?

प्रशिक्षु– ....।

प्रशिक्षक– बल्ले बल्ले, शाबा शाबा आदि पंजाबी शब्दों का प्रयोग करते हुये ये कौन सा नृत्य कर रहे हैं?

प्रशिक्षु ....।

प्रशिक्षक– क्या आपको यह उल्लास व वीर भावना से भरा लोकनृत्य प्रतीत होता है ?

प्रशिक्षु–..।

उपरोक्त चित्र पंजाब का प्रसिद्ध लोकनृत्य भांगड़ा नृत्य का है। ऐसे में तो ये नृत्य पुरुषों का है किन्तु कभी–कभी स्त्रियां भी इसे करती हैं किन्तु पुरुषों और स्त्रियों का सम्मिलित नृत्य प्रचार में अधिक है। भांगड़ा नृत्य उल्लास और वीर भावना प्रदर्शक लोकनृत्य है। अतः इस नृत्य का प्रदर्शन खुशी के अवसर पर किया जाता है।

वेषभूषा

पुरुष नर्तक रंगीन लुंगी, ढीला कुर्त्ता, गले में माला कामदार वास्केट तथा सिर पर छोटी से पगड़ी बांधते हैं। दोनों हाथों में चटक रंगो का रूमाल बाँध लेते हैं। स्त्रियाँ चटक रंगों का सलवार कुर्त्ता व दुपट्टा एवं चोटी में परान्दा का प्रयोग करती हैं।

नृत्य विधि

इसमें पैर और हाथों का ही संचालन विशेष रूप से होता है। मुख के भावों का कोई विशेष महत्व नहीं होता है। लय धीमी गति से प्रारम्भ होती है और क्रमशः तेज होती जाती है। लय की चरम सीमा पर नर्तक जोश और उत्साह में एक दूसरे के कन्धों पर खड़े हो जाते हैं और हाथों से लय देते

रहते हैं। यह नृत्य काफी देर तक चलता है तथा इसके साथ ढोलक या नगाड़ा की संगीत करते हैं। बीच–बीच में चिल्लाते भी हैं तथा सीटी भी बजाते हैं। इस प्रकार नृत्य काफी समय तक चलने के बाद उसकी गति चरम सीमा पर पहुँच कर समाप्त होती हैं।

इनके अतिरिक्त गैर नृत्य (भीलों का) संथाल नृत्य, नागालैण्ड नृत्य घूमर नृत्य जैसलमेर का कमार रियासत की तेरह ताली नृत्य आदि भी लोकनृत्य हैं।

स्थानीय नृत्य

स्थानीय नृत्य के अन्तर्गत दक्षिण भारत का भरतनाट्यम नृत्य, उत्तर का कथक नृत्य, पूर्व का मणिपुरी नृत्य आदि आते हैं जो कि शास्त्रीय नृत्य की कोटि में ही गिने जाते हैं। यहां पर कथक लय नृत्य और भरतनाट्यम नृत्य का परिचय दिया जा रहा है।

कथकनृत्य

कथकनृत्य उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश , राजस्थान, पंजाब आदि प्रांतों में प्रचालित है। यह यहाँ का शास्त्रीय नृत्य है। इस नृत्य में कथा प्रधान है, इस लिये इसे कथक की संज्ञा दी गई है। महाभारत, महापुराण तथा नाट्यशास्त्र में भी 'कथक' शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है।

'संगीत रत्नाकर' के तेरहवें अध्याय में भी 'कथक' शब्द का उल्लेख है। मोहनजोदड़ों तथा हड़प्पा की मूतियों से कथक नृत्य का ही आभास मिलता है।

मुसलमानों के आगमन से कथक नृत्य की रूपरेखा में काफी परिवर्तन हुआ मुस्लिम राज्य स्थापित होने से नृत्य भगवान के मन्दिरों से राजदरबारों में पहुँचा उनमें भक्ति भावना के स्थान पर श्रृंगारिकता का प्राचुर्य हो गया।

उद्देश्य

नृत्य का उद्देश्य ईश्वर उपासना न होकर सिर्फ राजाओं के मनोरंजन की वस्तु हो गई। राधा कृष्ण के पावन नृत्य में आध्यात्मिक भाव के स्थान पर श्रृंगारिक भावना ने स्थान ले लिया। इस नृत्य प्रदर्शन से राजदरबारियों की कामवासना की तृप्ति होती थी। अतः नृत्य धीरे–धीरे सभ्य समाज से दूर होने लगा और केवल मनोरंजन का साधन मात्र रह गया। कत्थक नृत्य का अलग साहित्य बना लिया गया। नृत्य के सभी पारिभाषिक शब्द ''उर्दू'' के रख लिये गये, जैसे, सलामी, आमद, रियाज आदि।

अन्तिम नवाव वाजिद अली शाह के समय में संगीत को नया जीवन मिला। उन्होंने स्वयं ''ललनपिय'' उपनाम से कई ठुमरियों की रचना की वाजिद अली शाह के गुरू 'स्व0 ठाकुर प्रसा' जी के समय से कथक नृत्य का विशेष प्रचार हुआ।

विधि

नर्तक तैयारी के साथ पैरों की गति से तबला तथा परवावज के बालों को निकालते हैं। इस नृत्य के साथ तबला तथा परवावज की संगीत की जाती है। इसमें अधिकतर परम्परागत कृष्ण चरित्र का चित्रण किया जाता है।

वेषभूषा

इस नृत्य शैली में चूड़दार पायजामा और घेरदार कुर्ता पहना जाता है। कुर्त्ते के ऊपर कोटी तथा सर पर चुन्नटदार, कामदार जड़ी की तोपी पहनते हैं। आजकल लहेगा, ब्लाउज, चूड़ीदार तथा दुपट्टा ज्यादा प्रचलित है।

प्रसिद्ध नृत्यकार

कत्थक नृत्य के प्रसिद्ध नृत्यकार इस प्रकार है जिन्होंने अपनी शैली से नृत्य जगत को छन्द मय कर दिया। स्वः बिन्दादीन महाराज, अच्छन महाराज शम्भू महाराज, पं0 उदयशंकर, श्रीमती सितारा देवी, दमयन्ती जोशी पं0 गोपी कृष्ण, पं0 बिरजू महाराज, रोशन कुमारी एवं लच्छू महाराज आदि का नाम उल्लेखनीय है।

भरतनाट्यम

भरतनाट्यम दक्षिण भारत का है जो कि अब केवल दक्षिण भारत में नही वरन उत्तर भारत में भी लोकप्रियता की शिखर पर है। इसका सम्बन्ध देव दासियों से रहा है। कहा जाता है कि दक्षिण भारत बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रहा अतः वह वाह्य प्रभाव से अछूता रहा।

विशेषता

इस नृत्य में मुद्राओं का बाहुल्य है। इसमें विखरी हुई कुछ कथावस्तु भी मिलती है पर कथक के समान कथानक नहीं होता। नृत्य के साथ मृदंगम से संगति की जाती है तथा साथ ही कर्नाटकी गति गाते हैं।

भरतनाट्यम नृत्य का क्रम

इस नृत्य को मोटे तौर से सात भागों में बांटा जा सकता है जिन्हें चरण कहते हैं। इनका क्रम इस प्रकार है। 1. अल्लारिपु 2. जेथीस्वरम् 3. शब्दम् 4.वर्णम 5. पदम् 6. तिल्लाना 7. श्लोकम्

वेशभूषा

भरतनाट्यम् नृत्य में मराठी स्त्रियों की तरह लम्बी साड़ी पहनते हैं। साड़ी दोनो पैरों में चिपकी रहती है। धोती के ऊपर वाले हिस्से को दुपट्टे की भांति कन्धे पर रखते हुये, कमर में लपेटे लेते हैं कमर में करधनी तथा हाथ और गले में आभूषण पहनते हैं।

प्रसिद्ध नृत्यकार

प्रसिद्ध अभिनेत्री वैजयन्ती माला, हेमामालिनी, डॉ0 पदमा सुब्रमणयम, पं0 गोपीकृष्ण श्रीमती रूकिमणी अरूण्डेल आदि ने भरतनाटयम् के क्षेत्र में काफी ख्याति आर्जित की है।

निर्देश

प्रशिक्षु

विभिन्न चित्रों, पुस्तकालयों, फिल्मों से अधिकाधिक तथय एकत्र करने का प्रयत्न करें। विभिन्न नृत्यों से सम्बन्धित चित्रों का एलबम बनाये तथा उनके विषय में उपयुक्त सामग्री का संग्रह करें। वर्तमान समय में इण्टरनेट की सुविधा होने से प्रशिक्षु सहजता से सभी आवश्यक तथ्यों को इण्टरनेट से प्राप्त कर सकते हैं।

भाव नृत्य

भाव नृत्य के अन्तर्गत दक्षिण भारत का एक प्राचीन शास्त्रीय नृत्य 'कथकलि' के बारे में विस्तार से चर्चा की जायेगी। इस नृत्य में संगीत के स्वर और ताल के अनुसार पैरों में थिरकन तो होती है।, इसके साथ–साथ भावों का प्रदर्शन भी प्रत्येक नृत्य में रहता है। संक्षेप में ***"जिस नृत्य में भावों का प्रदर्शन मुख्य लक्ष्य रहता है, वह भाव नृत्य कहलाता है।"*** कथकलि आदि नृत्य इसी प्रकार के हैं।

चर्चा बिन्दु

प्रशिक्षक निम्न बिन्दुओं पर प्रशिक्षुओं से चर्चा करें–

प्रशिक्षक – क्या आप जानते हैं यह चित्र किसका है ?

प्रशिक्षु– ....।

प्रशिक्षक– यह चित्र एक प्रसिद्ध नृत्य शैली की है क्या आप इस नृत्य शैली से परिचित हैं ?

प्रशिक्षु– ....।

प्रशिक्षक– इसे भावनृत्य के अन्तर्गत क्यों रखा गया तथा यह किस प्राप्त का नृत्य हैं ?

प्रशिक्षु– ....।

प्रशिक्षु द्वारा प्राप्त जानकारियों के आधार पर प्रशिक्षक कथकलि नृत्य के विषय में सविस्तार बतायें– कथकलि नृत्य में प्रारम्भ में अपने आराध्य देव के समक्ष, आराधना, उपासना, और अपना सर्वस्व समर्पण की दृष्टि से किये जाते हैं। कथकलि, भाव नृत्य में सभी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति होती है। **"प्रसन्नता"** की अभिव्यक्ति के लिये चेहेरे पर मुस्कान, नेत्रों में चमक, आदि हर्ष की अभिव्यक्ति करते है तो **विषाद** की अभिव्यक्ति के लिये मुख्य की सागृति इस प्रकार बना ली जाती है कि दर्शक दुख का भाव अनुभव कर सके। कथकलि नृत्य में नर्तक–नर्तकी घुंघरूओं की मधुर झंकार के साथ भावों की अभिव्यक्ति द्वारा दर्शकों पर गहरा प्रभाव डाल सकने में समर्थ होते हैं। कथकाल नृत्य के साथ 'मर्दल' (म्रदंग), रूद्र वीणा तथा वन्शी का प्रयोग होता है।

विधि

केरल की इस नृत्य विधा में संगीत, कथा तथा अभिनय का सुन्दर संयोग है। अभिनेता स्वयं कुछ नहीं बोलता, जिस पात्र का सम्वाद होता है वह रंगमंच (Stage) पर आकार कथा के अनुसार अभिनय करता है।

विशेषता

इस नृत्य में स्त्री का अभिनय भी अधिकतर पुरूष ही करते हैं। इस नृत्य में नवों (नौ) रसों का उपयोग होता है जबकि अन्य भारतीय नृत्यशैलियों में श्रृंगार रस का आधिक्य रहता है।

वेशभूषा

शरीर पर एक चुस्त जैकेट और एक विचित्र प्रकार का रंग बिरंगा घाघरा पहनते हैं चेहरे को लाल, पीला, सफेद पाउडर व बिन्दी से सजाकर भौंवों पर काला रंग लगा कर, आँखों में काजल व ओंठों में सुर्खी लगाई जाती है। मस्तक पर तिलक और सर पर बड़ा सा मुकुट लगाया जाता है। इस नृत्य की वेशभूषा ही इसकी मुख्य पहचान है।

प्रसिद्ध नृत्यकार

सुश्री दययन्त्री जोशी ....।

पुनरावृत्ति के लिये मुख्य बिन्दु

1. मनुष्य के हृदय में उपजे भावों को सरलता से व्यक्त करना ही लोकनृत्य की विशेषता है।
2. लोकनृत्य किसी भी संस्कृति की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है।
3. कथक उत्तर भारत की तथा भरतनाट्यम दक्षिण भारत की सर्वाधिक प्रचलित स्थानीय नृत्यशैली है।
4. जिस नृत्य में भाव प्रदर्शन मुख्य लक्ष्य रहता है वह भाव नृत्य कहलाता है जैसे कथकलि।
5. कथकलि में पुरुष की स्त्री का अभिनय करते है एवं इस नृत्य में जो रसो का उपयोग होता है।

बोध प्रश्न

1. लोक नृत्य से आप क्या समझते हैं ?
2. लोकनृत्य तथा भाव नृत्य में क्या अन्तर हैं ?
3. गरवा नृत्य का मूल प्रदेश क्या है ?
4. कथक और भरतनाट्यम किस प्रान्त की नृत्य शैलिया हैं।
5. किसी एक प्रमुख भाव नृत्य का नाम बतायें ?
6. अन्य प्रचलित लोक नृत्यों के विषयमें बतायें ?
7 कथकलि नृत्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालें ?

नाटक

समसामयिक समस्याओं में ज्वलंत समस्या पर्यावरण प्रदूषण की है, जिसके लिये कुछ प्रतिशत पॉलीथीन को जिम्मेदार ठहराया जाता है। यहाँ हम नाटक के माध्यम से कूड़ा करकट पॉलीथीन आदि समस्या पर चर्चा करेंगे तथा नाटक के पात्रों व संवाद के माध्यम से समस्या का निराकरण करने का संदेश प्रेषित करेंगे।

चर्चा बिन्दु

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें–
प्रशिक्षक – (कूड़े के ढेर की ओर इंगित करते हुये) यह क्या है ?
प्रशिक्षु– ....।
प्रशिक्षक– क्या यह कूड़े का ढेर ऐसे ही खुला पड़ा रहता है ?
प्रशिक्षु– ....।
प्रशिक्षक– क्या आप सभी अपने घर के कुड़ा करकट का इसी प्रकार बाहर फेंकते हैं ?
प्रशिक्षु– ....।
प्रशिक्षक– अच्छा कूड़े के ढेर में वे नीली, सफेद, पीली रंग बिरंगे, क्या दिख रहे हैं ?
प्रशिक्षु– ....।

आज इसी ज्वंलत समस्या को सामने रखते हुये एक नाटक का मंचन किया जायेगा जिसके माध्यम से व्यर्थ पदार्थो को फेंकने तथा पौलीथीन के प्रयोग पर चर्चा की जायेगी।

इस नाटक का शीर्षक पर्यावरण सुरक्षा रखना उचित होगा। नाटक की अवधि 15 से 20 मिनट।

पात्र परिचय

1. एक बालिका
2. श्रीमान कूड़ा महाशय

वेश भूषा

(1)बालिका सामान्य बच्चों की तरह फ्राक या अन्य ड्रेस में (2) श्रीमान कूड़ा महाशय, हरे, भूरे, मटमैले रंग के गन्दे कपड़ों में, सर पर गन्दा साफा बांधे हुये।

निर्देश

प्रशिक्षु पात्रों की वेशभूषा का चयन अपनी इच्छानुसार, रचनात्मक रूप से, पात्रों के चरित्र के अनुसार करने के लिये स्वतन्त्र हैं। 'नाटक को प्रभावी बनाने के लिये वे भिन्न–भिन्न प्रकार की वेशभूषा व मेकअप करा सकते हैं।

नाटक पर्यावरण सुरक्षा

प्रथम दृश्य

(मंच पर एक बालिका, (काल्पनिक नाम) कल्पना, कूड़े के ढेर, से वार्तालाप करती हुई)

कल्पना– आप कौन हैं? कितनी दुर्गंध आ रही है यहाँ? मै तो बीमार पड़ जाउंगी।

श्रीमान कूड़ा महाशय– मैं कूड़ा करकट हूँ और हर जगह पाया जाता हूँ।

कल्पना– आप कितने बुरे दिखाते हैं ? आप किन वस्तुओं से बने हैं ?

श्रीमान कूड़ा महाशय– मै, सब्जियों के छिल्कों, पुराने व फटे कपड़ों, जूतों, टूटे फूटे बर्तन, कागज और जो भी आप व्यर्थ समझ के फेंकती हैं, उनसे बना हूँ।

कल्पना– आपका निवास स्थान कहाँ है श्रीमान ?

श्रीमानकूड़ा महाशय– वैसे तो डस्टबिन (Dustbin) मेरा घर है पर आप चाहें तो किसी भी पात्र में या गडढ़े में रख कर ऊपर से ढक सकतें हैं।

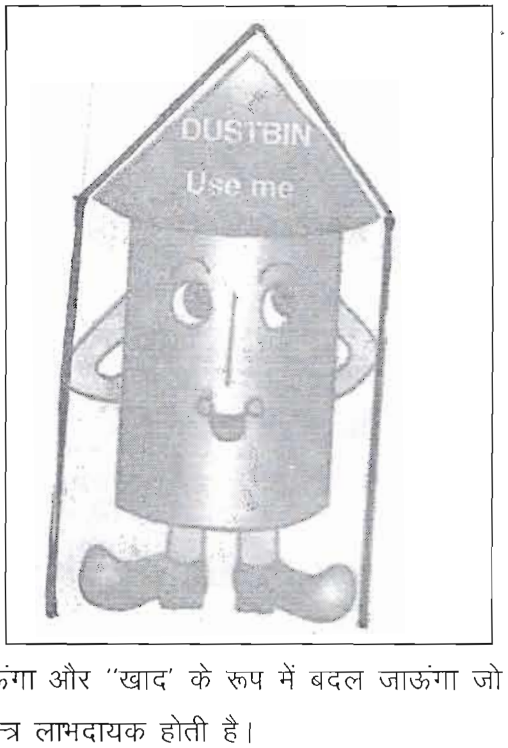

कल्पना– तो फिर आप यहाँ, इस प्रकार से, दुर्गन्ध में खुले रूप से क्यों पड़े हैं ?

श्रीमान कूड़ा महाशय– मैं यहां हूँ इसलिये क्योंकि लोग मुझे यहाँ वहाँ, जहाँ मन चाहा, फेंकते रहते हैं। यदि वे मुझे एक, गडढे में डाले तथा उस गडढे को ढक दे तो उनके लिये उपयोगी साबित हो सकता हूँ।

कल्पना– वह कैसे महाशय ?

श्रीमानकूड़ा महाशय– वहाँ मैं मिट्टी के साथ मिल जाऊंगा और "खाद' के रूप में बदल जाऊंगा जो कि आपकी फसलों के लिये अत्यन्त्र लाभदायक होती है।

कल्पना— यह तो बड़ी अच्छी बात है? पर वह कौन है? (हवा में उड़ती हुई एक पौलीथीन की ओर इशारा करती हुई)।

> प्रशिक्षु यदि चाहें तो किसी बालक या बालिका को पॉलीथीन से सुसज्जित कर मंच पर प्रवेश करा

श्रीमानकूड़ा महाशय— वह 'श्रीमती पौलीथीन' हैं।

कल्पना— श्रीमती पौलीथीन ? कितनी खूबसूरत दिखती हैं ? ये हमारे लिये अत्यन्त उपयोगी भी हैं। हम इनमें कितनी वस्तु में ले जाते हैं। यह बहुत अच्छी हैं।

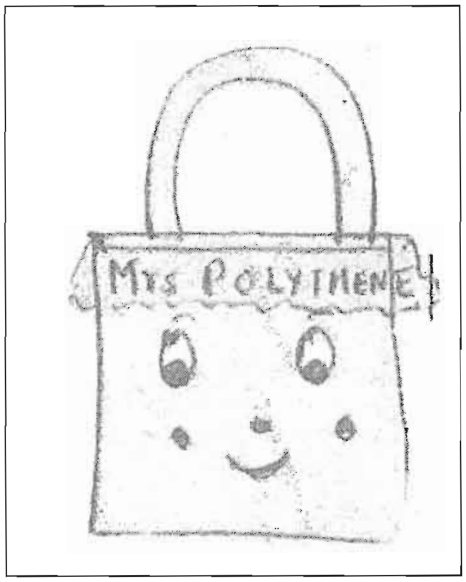

श्रीमानकूड़ा महाशय— प्रिय बालिका, निःसन्देह वह अत्यन्त खूबसूरत तथा उपयोगी हैं परन्तु वह मानव की सबसे ज्यादा खतरनाक शत्रु भी शाबित हुई हैं।

कल्पना — वह कैसे महाशय ?

श्रीमानकूड़ा महाशय— वह (पॉलीथीन) कभी भी मिट्टी के साथ घुलती मिलती नहीं है। वह प्लास्तिक से बनती हैं। आप उसे कभी भी नष्ट नहीं कर सकते। यहाँ तक कि यदि कभी जीवजन्तु भी इन पॉलीथीन को निगल लेते हैं तो उनकी मृत्यु तक हो जाती है।

कल्पना— इसका अर्थ यह है कि वह इतनी बुरी हैं?

श्रीमानकूड़ा महाशय— हाँ छोटी बालिका

कल्पना— फिर हम क्यों उनका प्रयोग करें?

श्रीमानकूड़ा महाशय— हमें, कभी भी पॉलीथीन का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

कल्पना— महाशय! अब मुझे जाने की इजाजत दीजिए। मैं घर जाऊगी और अपने अभिभावकों और पड़ोसियों को समझाउंगी कि वे पॉलीथीन का प्रयोग कतई ना करें।

श्रीमानकूड़ा महाशय— हाँ प्रिय बालिका! ऐसा करने से यह पृथ्वी हम सभी के लिये एक स्वस्थ स्थान बन जायेगा। लेकिन क्या आप मुझे यहाँ ऐसे ही अकेले, खुले में, पड़े रहने देंगी?

कल्पना— कभी नहीं महाशय! मैं आपको आपकी उचित जगह 'डस्टबिन' में रखूंगी। (यह कहते हुये बालिका, श्रीमान कूड़ा महाशय का हाथ पकड़ कर , मंच से प्रस्थान करती हैं।)

उद्देश्य

इस नाटक का उद्देश्य, प्रशिक्षुओं को पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है। खेल–खेल में, सरल पात्रों व सरल वार्तालाप के माध्यम से यह सन्देश प्रेषित करना है कि हम किस तरह कूड़ा करकट को यथा स्थान, गड्ढों या डस्टबिन में डाल कर, तथा पॉलीथीन का बहिष्कार कर पर्यावरण का स्वच्छ बना सकते हैं।

बोध प्रश्न

1. कूड़ा करकट किन–किन चीजों से बना है ?
2. कूड़ा करकट कहाँ फेंकना चाहिये ?
3. कूड़ा किस प्रकार मिट्टी में मिलकर खाद बनाता है ?
4. पॉलीथीन का प्रयोग क्यों नहीं करना चाहिये ?
5. पॉलीथीन के स्थान पर हमें किस प्रकार के बैग का प्रयोग करना चाहिये ?

निर्देश

इस नाटक के आधार पर प्रशिक्षु विभिन्न समसामयिक विषयों पर नाटक करवायें तथा नाटक में अन्तनिहित ज्ञान व संकल्पना को छात्रों तक पहुँचाने के लिये विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री, प्रोजेक्ट, मॉडल, Video clip, Audio clip आदि की सहायता ले सकते हैं।

सन्दर्भ पुस्तकें

1. कथक नृत्य परिचय – प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
2. कला एवं संगीत शिक्षण – राधा प्रकाशन मन्दिर
3. Rainbow (for class-vii) बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश।